रजिस्ट्री सं० डी- 222

REGISTERED NO. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 11] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 13, 1965 (फाल्गुन 22, 1886)
No. 11] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 13, 1965 (PHALGUNA 22, 1886)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नोटिस
NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 27 फरवरी, 1965 तक प्रकाशित किए गए थे :—
The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 27th February, 1965 :—

अंक Issue No.	संख्या और तारीख No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
16.	No. 9-ITC (PN)/65, dated 23rd Feb., 1965	Ministry of Commerce	Utilisation of import licence for radio components for the import of transistor radio components during April 1964-March 1965.
	No. 10-ITC(PN)/65, dated 23rd Feb., 1965	Do.	Import of (*i*) Fruits all sorts, excluding coconuts and cashewnuts and Dates, (*ii*) Asafoetida (*iii*) Commiseeds and (*iv*) Medicinal herbs from Afghanistan during 1965-66 Trade Arrangement period.
	No. 11-ITC(PN)/65, dated 23rd Feb. 1965	Do.	Do.
	No. 12-ITC(PN)/65, dated 23rd Feb., 1965	Do.	Import of Hides and Skins, raw or salted from Afghanistan during 1965-1966 Indo-Afghan Trade Arrangement period.
17.	No. 13-ITC(PN)/65, dated 24th Feb., 1965	Do.	Division of work relating to Indo-Afghan Trade Arrangement between the I.T.C. Offices at Delhi and Amritsar.
18.	No. 14-ITC(PN)/65, dated 25th Feb., 1965	Do.	Import of cotton seed oil and/or Soybean oil from U.S.A. under Agricultural Commodities Agreements.
19.	No. F-4(2)-W&M/65, dated 27th Feb., 1965	Ministry of Finance	Issue of 7% Gold Bonds 1980.

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांगपत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची
CONTENTS

	पृष्ठ Pages
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	105
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	203
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	133
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें	—

	पृष्ठ Pages
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्यक्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाये और जारी किये गये साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) ..	415
भाग II—खंड 3—उप-खंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाये और जारी किये गये आदेश और अधिसूचनाएं	873
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	71
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	155
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें ..	83
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं ..	19
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमे अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं ..	2343
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें ..	51
पूरक सं० 11—	
6 मार्च, 1965 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	339
13 फरवरी, 1965 को समाप्त होनेवाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु से संबंधित आंकड़े ..	351

	Pages
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations and Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	105
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc., of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	203
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions, issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc., of Officers issued by the Ministry of Defence	133
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories ..	415
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issed by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories	873
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	71
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	155
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	83
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	19
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	2343
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	51
SUPPLEMENT No. 11—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 6th March 1965	339
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 13th February 1965	351

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

---

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1965

सं० 15-प्रेज/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित अति असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको विशिष्ट सेवा मंडल "प्रथम श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

मेजर जनरल करतार नाथ दूबे, (आई सी—6030), इंजीनियर्स।

ब्रिगेडियर शावक नस्वारनजी अंनिया, (आई सी—2130), सिगनल्स।

ब्रिगेडियर सैयद बाकर रज़ा, (आई सी—806), आर्टिलरी।

ब्रिगेडियर बद्री नाथ उपाध्यक्ष, (आई सी—2958), 9 गोरखा राइफल्स।

सं० 16-प्रेज/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको विशिष्ट सेवा मेडल "द्वितीय श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

ब्रिगेडियर बिक्रम प्रकाश वधेरा (आई सी—434), इंजीनियर्स।

ब्रिगेडियर त्रिचीनोपोली वेदीवेल जेगानाथन, (आई सी 556), इंजीनियर्स।

ब्रिगेडियर कृष्ण चन्द सोनी, (आई सी—2053) इंजीनियर्स।

कर्नल सिडनी एलेक्जेन्डर पिन्टो, (आई सी—1038), इंजीनियर्स।

विंग कमांडर हरदयाल सिंह ढिल्लन, (3237), जी० डी० (पी०)।

स्क्वाड्रन लीडर करम सिंह (5132), तकनीकी इंजीनियरिंग।

स० 17-प्रेज/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियो द्वारा प्रदर्शित उच्चकोटि की विशेष सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको विशिष्ट सेवा मेडल "तृतीय श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते है :—

लेफ्टिनेन्ट कर्नल तरलोचन सिंह (आई सी—973) इंजीनियर्स।

विंग कमांडर खरबन्दा जय चन्द्र, (3445), तकनीकी इंजीनियरिंग।

मेजर मुनूस्वामी गोविन्द रेड्डी (आई सी—6350), इंजीनियर्स। (मरणोपरान्त)।

मेजर कृशन नन्दलाल बक्शी (आई सी—9851), इंजीनियर्स।

मेजर राम पाल सिंह (आ सी 2817), आई डी एस एम, 7 गार्ड्स।

लेफ्टिनेंट कमांडर रणजीत कुमार चौधुरी

फ्लाइट लेफ्टिनेंट जगमोहन सिंह विर्क (4437), जी डी (पी)।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट तपीश्वर दत्त वशिष्ट (4500), जी डी (पी)।

जे सी—17509 जमादार लछमन सिंह, इंजीनियर्स।

स० 13598 एम डब्ल्यु ओ हरभजन सिंह रत्न, सिगनलर (एयर)।

सं० 11346 एम डब्ल्यू ओ विनफ्रेड सम्युल, फिटर-1.

स० 16943 डब्ल्यू ओ कृष्ण विट्ठल राव।

स० 18-प्रेज/65—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्तव्य-परायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य में उनको "सेना मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर जयसिंह (आ सी—8088), आसाम राईफल्स।

अप्रैल 1964 में मेजर जयसिंह को एक विद्रोही नेता के छिपने के स्थान का पता लगाने तथा उस पर आक्रमण करने का कार्य सौंपा गया था। 20 व्यक्तियों सहित मेजर जयसिंह ने कठिन भूभाग तथा प्रतिकूल मौसम में चल कर उस स्थान का पता लगा लिया जो 200 विद्रोहियों द्वारा सुरक्षित था। उन्होने साहस पूर्वक अपने छोटे से दल के साथ उस छिपने वाले स्थान पर आक्रमण किया तथा उसके आधे भाग पर अधिकार कर लिया परन्तु ऊपर की भूमि से विद्रोहियों द्वारा वे दबा दिये गये। 13-14 अप्रैल की रात्रि तक युद्ध चलता रहा तथा उनके पास का गोला-बारूद कम होने लगा। इसलिए मेजर जयसिंह अपने साथियों के साथ गोलियों की बौछार के मध्य होते हुए आगे बढ़े तथा शेष भाग को कुछ हथियारों और गोला-बारूद सहित अपने अधिकार में कर लिया।

इस कार्यवाही में मेजर जयसिंह ने साहस एवं उच्च कोटि के नेतृत्व का परिचय दिया।

2. मेजर बालकृष्ण रामचन्द्र दास (आई सी—4553), 5/8 गोरखा राइफल्स।

मेजर दास को कम्पनी के एक कमान्डर के रूप मे एक दुर्गम और कठिन क्षेत्र में एक बड़े विद्रोही शिविर को नष्ट-भ्रष्ट करने का काम दिया गया था। 5-6 नवम्बर, 1963 की रात्रि को जब कि उनकी कम्पनी एक घने जंगल से गुजर रही थी तो यकायक अग्रिम प्लाटून पर एक विद्रोही सन्तरी ने गोली चलायी। यह अनुभव करते हुए कि विद्रोही शिविर निकट ही होगा, मेजर दास अपने प्लाटून को भागते हुए सन्तरी का पीछा करने के लिये आगे ले गये। लगभग दो सौ गज़ आगे जाने पर वह सुस्थित एवं गुप्त विद्रोही शिविर की भारी गोलाबारी के अन्दर आ गये। मेजर दास ने अपने अग्रवर्ती प्लाटून को साथ लेकर उस शिविर पर बिना किसी हिचकिचाहट के वार किया जिससे पांच विद्रोही मारे गये, बारह पकड़े गये तथा काफ़ी मात्रा में गोला-बारूद विस्फोटक और अन्य उपस्कर हाथ लगे।

इस साहसिक एवं निर्भीक कार्यवाही में मेजर घास ने साहस, दृढ़ संकल्प एवं उच्च कोटी के नेतृत्व का परिचय दिया।

3. मेजर शमशेर सिंह (आई सी—6712),
डोगरा रेजिमेंट।

फरवरी-मार्च, 1964 मे मेजर शमशेर सिंह एक डोगरा बटालियन की कम्पनी तथा एक राजस्थान सशस्त्र कान्स्टेबुलरी के सम्मिलित दल का जम्मू तथा काश्मीर में भारत तथा पाकिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा के समीप कमान कर रहे थे। पाकिस्तानी अतिक्रमणकारियों को उस क्षेत्र पर अधिकार जमाने से रोकने के लिये मेजर सिंह ने अपने दल को खाइयां खोद कर उस क्षेत्र के बिल्कुल समीप अधिक प्रतिरक्षात्मक स्थिति में स्थापित किया, जिन्हें अतिक्रमणकारी लगातार निकट से अपनी दृष्टि में रख रहे थे।

5 मार्च 1964 को बिना किसी उत्तेजना के अतिक्रमणकारियों ने मेजर सिंह के दल पर हथगोलों, राइफलों, हल्की मशीन गनों, मक्षोली मशीन गनों तथा मार्टरों से ही नहीं अपितु 25 पौंड की गनों से विध्वंसक गोला बारी आरम्भ कर दी उन्होंने हमारी स्थिति पर आग लगाने वाले गोले तथा चमकदार गोलियां चलायीं जिससे निकट की घास-फूस तथा झाड़ियों में आग लग गयी। इससे पूर्व कि आग खाइयों तथा बारूद को नष्ट करे मेजर सिंह जो कि गोलाबारी के बीच में थे ने प्रत्युत्पन्न मति से अग्नि की लपटों के पहुंचने से पहले ही बीच मे एक खाई खोद दी जिससे एक भारी विवचि आने से बची। यह गोला-बारी रुक-रुक कर 11 मार्च तक चलती रही। इस समय के बीच, बहुत कम विश्राम लिये हुए मेजर सिंह भीषण गोलाबारी के मध्य एक खाई से दूसरी खाई तक जाते रहे तथा अपने अधीन दल के जवानों का उत्साह बढ़ाते रहे जिन्होंने उनके वीरतापूर्ण नेतृत्व से प्रेरित हो कर विद्रोहियों को उस क्षेत्र मे अधिकार जमाने से रोका।

इस कार्यवाही मे मेजर शमशेर सिंह ने साहस, नेतृत्व तथा उच्च कोटि की कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल है।

4. कप्तान अमबहादुर गुरंग (एस आई—693)
3/8 गोरखा राइफल्स।

पाक्सितानी सेनाओं ने जम्मू तथा कश्मीर मे युद्ध विराम रेखा के दो सौ गज़ अन्दर आकर एक शक्तिशाली प्लाटून को जमा किया। यह क्षेत्र हमारी चौकियों पर अधिकार कर रहा था तथा हमारी टोह टुकड़ियों को परेशान कर रहा था। 22 सितम्बर 1964 को कप्तान गुरूंग को अपनी कम्पनी के साथ इस भयभीत स्थिति से निपटने के लिये नियुक्त किया गया। खराब भूमि की कठिनाइयों के होते हुए भी उन्होंने एक साधारण किन्तु बहुत ही प्रभावशील योजना बनाई और विद्रोहियों को पूर्णतः आश्चर्य में डाल कर उनकी गोलाबारी को शान्त कर दिया।

इस कार्यवाही में कप्तान गुरूंग ने साहस तथा उच्च कोटि के नेतृत्व का परिचय दिया।

5. कप्तान कंवर अजमेर सिंह (आई सी—13105),
3 जम्मू तथा काश्मीर राइफल्स।

जम्मू तथा काश्मीर में कप्तान कंवर अजमेर सिंह एक गश्ती दल के कमाण्डर थे जिस पर 21 तथा 22 सितम्बर, 1964 की रात्रि को पाकिस्तानी अतिक्रमणकारी के एक छिपे हुए दल ने गोलियां चलायीं। इस आमने-सामने होते हुए युद्ध के मध्य कप्तान सिंह अपने दल को निर्देश देते रहे तथा अपने जवानों को साहसपूर्वक युद्ध करने और शत्रु को नष्ट करने के लिए उनका उत्साहवर्धन करते रहे। उन्होंने विद्रोहियों को शान्त करने के लिये एक दल को भेजने में शीघ्र तथा सामयिक कार्यवाही की। उनकी युद्ध भावना तथा प्रेरक नेतृत्व के कारण ही उनके जवान उस घेरे को तोड़ने मे सफल हुए।

इस कार्यवाही में कप्तान कंवर अजमेर सिंह ने साहस एवं उच्च कोटि की नेतृत्व-शक्ति का परिचय दिया।

6. 2/लिफ्टिनेंट परषोत्तम कुमार प्राशर (आई सी—15074)
कोर आफ इंजीनियर्स (मरणोपरान्त)।

2/लिफ्टि० प्राशर कठिन और भयानक गंगटोक नतूला सड़क की प्रायोजना के निर्माण कार्य में लगे हुए थे। संकटों की उपेक्षा करते हुए वह वर्फ, वर्षा तथा कुहरे में उच्च स्थानों पर कार्य करते रहे तथा वह सदा अधिक भयानक कार्यों को स्वयं करते थे।

11 फरवरी 1964 को तीन भयानक पहाड़ियों को सड़क बनाने के लिये उड़ाना था। 2/लिफ्टि० प्राशर ने इन पहाड़ियों को उड़ाने के भयानक कार्य को स्वयं अपने हाथ में लिया। उन्होंने पहली दो पहाड़ियों को सफलतापूर्वक उड़ा दिया, किन्तु तीसरी पहाड़ी को उड़ा कर जब वह मलबे की जांच करने के लिए आगे गये तो एक अस्थाई खड़ी पहाड़ी अचानक गिर पड़ी और वह उसके नीचे दब गये तथा उनकी उसी स्थान पर मृत्यु हो गई।

2/लिफ्टि० परषोत्तम कुमार प्राशर, एक नवीन राजादिष्ट अधिकारी, ने साहस, नेतृत्व एवं उच्च कोटी की उदाहरणीय कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

7. जे सी—2195 सूबेदार मेजर रोशन,
9वीं बटालियन, डोगरा रेजिमेन्ट।

देर-एल-बलाह (संयुक्त अरब गणराज्य) में जमादार मदन लाल के कवार्टर में दिनांक 18 जनवरी, 1964 को साढ़े बारह बजे दिन में दोषयुक्त तेल उष्मक से आग लग गई और जमादार मदन लाल उसमें फंस गये। कमरा लकड़ी का बना था तथा द्वार पर जलते हुए ऊष्मक ने मार्ग अवरुद्ध कर दिया। उस स्थान पर पहुंचने वाले प्रथम अधिकारी सूबेदार मेजर रोशन थे जो कमरे में घुस गये और उन्होंने जलता हुआ ऊष्मक उठा कर बाहर फेंक दिया तथा जमादार मदन लाल को सुरक्षित बाहर ले आए। परन्तु स्वयं उनके मुख हाथ पैर बुरी तरह जल गए और वे बेहोश हो गए। उनकी शीघ्र कार्यवाही से जमादार मदन लाल के प्राणों की तथा संयुक्त राष्ट्र आपात सेना की बहुमूल्य सम्पत्ति की रक्षा हुई।

सूबेदार मेजर रोशन ने उदाहरणीय साहस, पहलशक्ति एवं प्रत्युत्पन्न मति का परिचय दिया है।

8. 91006 सूबेदार हरका बहादुर लिम्बू,
आसाम राइफल्स।

13/14 अप्रैल, 1964 की रात्रि को सूबेदार हरका बहादुर लिम्बू, जो आसाम राइफल्स की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे, ने कालम कमाण्डर के आदेश पर एक विद्रोही के छिपने के स्थान पर आक्रमण किया तथा आधे पर अधिकार कर लिया। शेष आधा भाग ऊंचे स्थान पर स्थित था जहां से विद्रोही हल्की मशीनगन तथा मार्टर से प्लाटून पर गोलाबारी करने लगे। रात्रि अंधेरी थी तथा बूंदें पड़ रही थीं। गोला बारूद कम हो रहा था तथा स्थिति विषम हो रही थी। सूबेदार लिम्बू अपने साथियों के साथ गोलियों की बौछार के मध्य होते हुए आगे बढ़े और छिपने के स्थान पर वार किया तथा शेष आधे को भी अधिकार में कर लिया। विद्रोही छः मरे हुओं को तथा कुछ गोला बारूद छोड़ कर भाग गये।

इस कार्यवाही में सूबेदार हरका बहादुर लिम्बू ने साहस तथा उच्च कोटि की नेतृत्व शक्ति का परिचय दिया।

9. जे सी—6194 सूबेदार करतार सिंह,
डोगरा रेजिमेंट।

सूबेदार करतार सिंह डोगरा बटालियन की एक प्लाटून की कमान संभाले हुए थे जिसे अन्य दो अनुभागो के साथ राजस्थान कान्स्टेबुलरी की सहायता के लिये जम्मू तथा काश्मीर में भारत तथा पाकिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर तैनात किया गया था। पाकिस्तानी अतिक्रमणकारियों को रोकने तथा अपन

स्थिति का पता लगने से बचाने के लिये सूबेदार सिंह ने अनेकों वैकल्पिक स्थितियां बनायी तथा उनको गहरी सुरंग खाइयों से साथ परस्पर सम्बद्ध कर दिया।

5 से 11 मार्च, 1964 तक अतिक्रमणकारी सूबेदार करतार सिंह की स्थिति पर भारी गोलाबारी करते रहे। सूबेदार करतार सिंह अपने जवानों का उत्साह बढ़ाने के लिए एक स्थिति से दूसरी स्थिति तक जाते रहे। उनके उदाहरण द्वारा उत्साहित उनके जवानों ने अतिक्रमणकारियों पर ठीक गोलाबारी की और उनके अनेक मझोली मशीनगनों तथा मार्टरों की स्थितियों को शांत कर दिया।

समस्त कार्यवाही में सूबेदार करतार सिंह ने साहस, कर्तव्य परायणता तथा नेतृत्व का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप है।

10 9080042 जमादार उजागर सिंह
13 जम्मू तथा काश्मीर मिलीशिया।

जमादार उजागर सिंह जम्मू तथा काश्मीर की गुरेज़ घाटी में प्लाटून कमाण्डर के रूप में एक चौकी का कार्यभार सभाले हुए थे। 22 सितम्बर, 1964 को पाकिस्तानी अतिक्रमणकारियों ने उस चौकी पर आक्रमण कर दिया तथा निरन्तर हथगोलों तथा मझोली मशीनगन से गोलिया चलाते रहे। जमादार सिंह ने अपने जवानों को पीछे से युद्ध करने के लिए प्रेरित किया तथा उसके साहस द्वारा प्लाटून ने अतिक्रमणकारियों को भारी क्षति पहुंचा कर आक्रमण को विफल कर दिया।

इस कार्यवाही में जमादार उजागर सिंह ने साहस तथा उच्च कोटि की नेतृत्वशक्ति का परिचय दिया।

11 3131526 बटालियन हवलदार मेजर हर नन्द,
7वी बटालियन, जाट रेजिमेन्ट।

18 मई, 1964 को बटालियन हवलदार मेजर हर नन्द एक प्लाटून के द्वितीय कमाण्डर थे जिसे जम्मू तथा काश्मीर में युद्ध विराम रेखा से दो हजार गज़ भारतीय सीमा के अन्दर स्थित एक पाकिस्तानी जमाव को साफ करने का आदेश मिला था। यह स्थान दस हजार फुट से भी अधिक ऊचाई पर था तथा वहा पहुचने का मार्ग अत्यधिक दुर्गम और संकटमय था। बटालियन हवलदार मेजर हर नन्द ने स्वतः आगे चलने वाली टुकड़ी का कमान सभाल लिया तथा साढे पाच बजे प्रात. पचास गज़ तक घिसट कर सब से अगली खाई तक पहुंच कर एक पडे हुए लट्ठे के पीछे अपनी स्थिति को सभाल लिया अचानक एक पाकिस्तानी अतिक्रमणकारी एक खाई से बाहर आया और उसने उनकी ओर गोली चलायी। बटालियन हवलदार मेजर हर नन्द ने उत्तर में गोली चला कर उसे बुरी तरह आहत कर दिया। तब वह आगे बढ़े और खदक का द्वार ढक दिया तथा अपनी टुकडी को बायी ओर मुड़ने का आदेश दिया। उन्होंने एक और पाकिस्तानी को गोली चलाकर मार दिया जो कि खाई से निकल कर अपनी बन्दूक चलाने के लिये निशाना बाध रहा था। फिर भी एक और अतिक्रमणकारी खाई से बाहर निकला और भागा, जबकि उन्होने उस पर गोली चलायी।

इनके नेतृत्व से प्रेरित होकर उनके जवानों ने हथगोले फेंक कर खाई पर आक्रमण किया जिससे एक अतिक्रमणकारी मारा गया जो अन्दर से गोली चला रहा था। बटालियन हवलदार मेजर हर नन्द ने खाई के द्वारा को बन्द कर दिया जिससे उनको अन्य दो खाइयों से मिलने वाली कुमक बन्द हो गयी। तीन अतिक्रमणकारियों को मार कर तथा दो को आहत कर उन्होने तब अपनी टुकडी को आगे बढाया किन्तु उन्हे पता लगा कि अतिक्रमणकारी भाग चुके थे।

इस कार्यवाही में बटालियन हवलदार मेजर हर नन्द ने सेना की उच्चतम परम्परा के अनुकूल साहस, निश्चय तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

12. 5729733 हवलदार इन्दर सिंह थापा
गोरखा राइफल्स।

5 नवम्बर, 1963 को गोरखा राइफल्स की एक कम्पनी को एक सौ विद्रोहियों के एक शिविर का पता लगाने तथा उसे ध्वस्त करने का आदेश दिया गया था। हवलदार इन्दर सिंह थापा जो, अगले प्लाटून की कमान सभाले हुए थे, ने अपनी प्लाटून को शीघ्रता से आगे बढ़ाया ताकि काफी रस्ता अधरे में पूरा कर लिया जाय। हवलदार थापा ने शीघ्र ही उस क्षेत्र को खोज लिया तथा दो सौ गज़ आगे विद्रोहियों के शिविर का पता लगा लिया जो उन पर अधिकार कर लेने की स्थिति में थे। एक अनुभाग को शिविर की दाहिनी ओर जाने का आदेश दे कर हवलदार थापा स्वय दो अन्य अनुभागों के साथ पहाड़ी की बायी ओर बढ़े। विद्रोही, जिनके ऊपर अचानक अधिकार कर लिए गया था, ने अपनी स्थितिया सम्भाल ली तथा गोली चलाने लगे। हवलदार थापा का एक अनुभाग घिसट कर आगे बढा तथा उसने उत्तर में गोली चलायी जिससे तीन विद्रोही मारे गये तथा दो आहत हुए। उनके शीघ्र तथा अचूक गोली चलाने के कारण विद्रोही हतोत्साह होकर अपने अस्त्र-शस्त्र तथा सामान फेंक कर जगल में भाग गए। हवलदार थापा की प्लाटून ने छ विद्रोहियों को बन्दी बना लिया तथा शस्त्र, बारूद और कागज़ात अधिकार में कर लिये।

इस कार्यवाही में हवलदार इन्दर सिंह थापा ने साहस उथा उच्च कोटि की निश्चय-शक्ति का परिचय दिया।

13 1502534 हवलदार गणपत शिन्दे,
कोर आफ इंजीनियर्स।

हवलदार गणपत शिन्दे, जो कि उप सेक्टर कमाण्डर थे, तवाग में बोमडीला सड़क के एक भाग के बनाने में लगे हुए थे। 12 अक्तूबर 1961 को जब वह कुछ स्थानीय मज़दूरों के साथ पहाड़ी क्षेत्र में कार्य कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि कुछ पहाड़िया मुख्य पहाड़ी से अलग हो रही है तथा भूमि स्खलन का अनुमान कर उन्होंने मज़दूरों को भागने का आदेश दिया। उनमें से एक फिसल कर गिर गया तथा छोटी-छोटी कुछ चट्टाने उसके ऊपर आ गयी। हवलदार शिन्दे शीघ्रता से उसे बचाने के लिए दौड़े, उसे वहा से निकाला तथा उसे भारी भूस्खलन के कुछ क्षणों के पूर्व ही उसे सुरक्षित स्थान पर ले आये।

इस कार्यवाही में हवलदार गणपत शिन्दे ने साहस तथा उच्च कोटि की कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

14 13713188 हवलदार दल बहादुर,
3 जम्मू तथा काश्मीर राइफल्स।

सितम्बर 1964 में जब जम्मू तथा काश्मीर में हमारी एक गश्ती टुकडी को पाकिस्तानी अतिक्रमणकारियों ने तीन ओर से घेर कर गोली चलाना आरम्भ कर दिया तो गश्ती टुकडी को निकालने के लिये अतिक्रमणकारियों की कम से कम एक स्थिति को समाप्त करना आवश्यक था। हवलदार दल बहादुर को चार अन्य के साथ गश्ती टुकडी की निकलने में रक्षा करने के लिये उनमें से एक स्थिति को उलझाये रखने का आदेश हुआ। अपने आदमियों के साथ उन्होंने स्थिति पर आक्रमण कर दिया तथा अनेक आक्रमणकारियों को हथगोलों तथा खुखरियों से मार दिया। जब उनका ब्रेन गनर आहत हो गया तो उन्होंने स्वय ब्रेन-गन को सम्भाल लिया तथा स्थिति पर गोली चलाना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार उन्होंने पाकिस्तानी स्थिति को शांत कर दिया जिससे हमारी गश्ती टुकडी का निकलना सम्भव हो सका।

इस कार्यवाही में हवलदार दल बहादुर ने कर्तव्य परायणता तथा उच्च कोटि के साहस का परिचय दिया।

15 5734738 लांस हवलदार कुलप्रसाद गुरुग,
3/8 गोरखा राइफल्स।

22 सितम्बर 1964 को एक पाकिस्तानी बंकर जम्मू तथा काश्मीर मे हमारी एक स्थिति के लिए सकट बना हुआ था। यह बंकर, जिसमे एक ऊंची मशीन गन थी, प्रमुख स्थान पर स्थित था तथा वहा तक पहुचने का प्रयास करना महान सकट से परिपूर्ण था। लांस हवलदार कुलप्रसाद गुरुग घिसटते हुए आगे गये, एक हथगोला फेंका तथा दौड कर बंकर मे घुस गये और मशीनगन की नली पकड कर उसे घसीट लाये। उन्होंने एक पाकिस्तानी को, जिसने उन्हे रोकने का प्रयत्न किया, खुखरी से मार डाला।

इस कार्यवाही मे लांस हवलदार कुल प्रसाद गुरूग ने भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओ के अनुकूल सराहनीय साहस तथा कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

16 2435605 नायक बचित्र सिह,
पजाब रेजीमेंट। (मरणोपरान्त)

25 सितम्बर, 1962 को जब चीनियो ने हमारी एक स्थिति पर भारी गोलाबारी आरम्भ कर दी उस समय नायक बचित्र सिह पजाब रेजीमेंट की एक चिकित्सा प्लाटून के साथ कार्य कर रहे थे। एक एन०सी०ओ० गम्भीर रूप से आहत हो गया यद्यपि गोलियो की बौछार के कारण आगे जाना कठिन था तथापि नायक बचित्र सिह घिसट कर खुले मे आगे गये, शान्ति और निश्चयपूर्वक एन०सी०ओ० की मरहम पट्टी की और उसे सुरक्षित स्थान पर वापस लाये। जब हमारी एक चौकी नाथूला के पास पीछे हट रही थी तो वह अन्तिम बार 21 अक्तूबर, 1962 को यहा पर एक ज़खमी की मरहम पट्टी करते हुए देखे गये थे।

इन समस्त मुठभेडो मे नायक बचित्र सिह ने सदैव भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओ की अनुकूल साहस तथा कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

17 1506750 लास नायक इकबाल सिह,
कोर आफ इजीनियर्स। (मरणोपरान्त)

लास नायक इकबाल सिह नेफा में सड़क बनाने वाली एक पहाडी उडाने वाली टुकडी के इन्चार्ज थे। उनका कार्यक्षेत्र घने जगल मे था तथा वहा पर जोके थी। इस के साथ-साथ निवासस्थान, वस्त्र तथा खाद्य सामग्री की भी कमी थी।

4 मई 1961 को वर्षा से वहा भारी भूस्खलन हुआ तथा सामान पहुचाने का रास्ता रुक गया। मजदूरो को अधिक भूस्खलनो का भय हो गया तथा वह काम करने से मना करने लगे। चूकि रास्ते का साफ करना आवश्यक था इसलिए नायक इकबाल सिह स्वय मजदूर लेकर आगे बढ़े तथा अधिकतम भूस्खलन को साफ किया। जब वे अन्तिम बार चट्टान उडाने के लिए बारूद मे आग लगाने गये तो एक बहुत बडी चट्टान गिर पडी तथा वे घाटी मे बह गये। वे समीप के अस्पताल मे ले जाये गये किन्तु गहरी चोटो के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही मे लास नायक इकबाल सिह ने भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओ के अनुरूप उदाहरणीय साहस तथा कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

18 2544334 लास नायक पाप्पू पिल्लई नादर,
मद्रास रेजिमेंट।

लास नायक नादर एक प्लाटून के लीडिंग कमाण्डर थे जिसे नागालैंड तथा मणिपुर की सीमा पर एक कुख्यात विद्रोही डेरे को समाप्त करने का कार्यभार सौपा गया था। दो दिन कठिन भूभाग तथा वर्षा मे चल कर जब प्लाटून विद्रोही कैम्प के पास पहुचा तो विद्रोहियो ने पास से गोली चलाना आरम्भ कर दिया। लास नायक नादर एक ब्रेनगन लेकर आगे दौडे तथा उन पर धावा बोल दिया। इसमे तीन विद्राही मारे गये और कुछ हथियार, गोला बारूद और मूल्यवान कागजात हाथ लगे।

लास नायक पाप्पू पिल्लई नादर ने स्थिर साहस, पहल तथा उच्च कोटि की कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

19 47396 राइफलमैन हरका बहादुर राय,
आसाम राइफल्स।

आसाम राइफल्स की एक टोह प्लाटून को मणिपुर तथा नागालैंड सीमा पर स्थित एक ग्राम मे कुछ विद्रोहियो को रोकने के लिए भेजा गया। अधेरी रात्रि मे लम्बी तथा कठिन मार्ग के बाद जब टोह टुकडी एक झोपडी के पास पहुची तो एक विद्रोही सतरी ने निकट से गोली चला दी। राइफलमैन हरका बहादुर राय ने सतरी पर आक्रमण कर दिया, उसकी भरी राइफल छीन ली तथा एक अन्य विद्रोही को, जो उनकी टुकडी के एक सदस्य के ऊपर निशाना लगा रहा था, मार डाला। उनकी टुकडी ने चार विद्रोहियो को मार डाला तथा कुछ हथियार, गोला बारूद और मूल्यवान कागजात को अपने अधिकार मे कर लिया। उच्च कोटि की राइफलमैन हरका बहादुर राय ने साहस तथा कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

20 5740093 राइफलमैन तोपबहादुर राणा,
गोरखा राइफल्स।

5 नवम्बर 1963 को गोरखा राइफल्स बटालियन की एक कम्पनी को लगभग एक सौ विद्रोहियो के एक शिविर का पता लगाने तथा उसे ध्वस्थ करने का आदेश हुआ। जब कम्पनी रात भर चलने के उपरान्त शिविर के क्षेत्र के पास पहुंची तो वहा दोनो ओर से गोलो का चलना आरम्भ हो गया। स्काउट राइफलमैन तोपबहादुर राणा उनके अनुभाग के कमाण्डर तथा एक और राइफलमैन ने विद्रोहियों की एक टुकडी का पीछा किया तो अचानक उन पर एक नाले के दूसरे किनारे के एक ऊचे स्थान से गोलिया चलायी जाने लगी। गोली चलते समय पाच विद्रोही नाले के किनारे पर चढ़ने का प्रयत्न कर रहे थे। राइफलमैन राणा ने गोलियो के मध्य दौड कर उन पर आक्रमण कर दिया तथा उन मे से दो को अपनी खुखरी से मार दिया। इस साहसिक कार्यवाही से वे विद्रोही, जो अपने साथियों की रक्षार्थ गोली चला रहे थे, हतोत्साह हो गये और भाग गये। राइफलमैन राणा की साहसपूर्ण कार्यवाही से अनुभाग कमाण्डर तथा दूसरे राइफलमैन के प्राणों की रक्षा हुयी।

इस कार्यवाही मे, राइफलमैन तोपबहादूर राणा ने साहस तथा उच्च कोटि की निश्चय शक्ति का परिचय दिया।

21 9093390 सिपाही अमीर हमज़ा शाह,
13 जम्मू तथा काश्मीर मिलीशिया (मरणोपरान्त)

सिपाही अमीर हमज़ा शाह जम्मू तथा काश्मीर की घाटी मे एक चौकी पर अपने अनुभाग के ब्रेन गनर थे। 22 सितम्बर, 1964 को पाकिस्तानी अतिक्रमणकारियो द्वारा किये गये भीषण आक्रमण के मध्य सिपाही शाह ने अपनी ब्रेनगन को चलाना जारी रखा तथा जब उनकी ब्रेन गन दु ख देने लगी और रुक गयी तो महान प्रत्युत्पन्न गति के साथ उन्होने उसे पुन. चलाना आरम्भ किया। उनको उपद्रवियो की एक गोली लगी परन्तु वह उस समय तक गोली चलाते रहे जब तक कि दूसरी गोली लगने से उनकी मृत्यु नही हो गयी। उनके वीरतापूर्ण कार्य से शत्रु को भीषण गोलाबारी से उनकी स्थिति की सुरक्षा हुयी।

सिपाही अमीर हमज़ा शाह ने महान साहस, दृढ़ सकल्प तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

स० 19-प्रेज/65—राष्ट्रपति, निम्नाकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्य परायणता अथावा साहस के उपलक्ष्य मे उनको "नौ सेना मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते है —

1. कमाडर क्राइटन मलकाम रेली

अप्रैल 1964 में नौसेना को बम्बई से पोर्ट ब्लेयर तक एक छोटा मोटर जलयान पहुंचाने का काम सौपा गया था। यह जलयान अन्तरस्थलीय जल परिवहन के लिये बनाया गया था तथा शान्त मौसम मे भी वह समुद्री यात्रा के लिये अनुपयुक्त था।

दिक्चालन साधन पुराने थे तथा जलयान पूरे सामान से सुसज्जित भी न था। यहां तक कि वह लम्बी समुद्री यात्रा के लिये प्राथमिक सुविधाओ से भी युक्त न था। अप्रैल तथा मई में मानसूनो के अधिक हो जाने के मध्य, बम्बई से अण्डमान तक उसे ले जाने का काम बहुत ही कठिन था।

कमाण्डर रैली ने इस काम के लिये स्वय को अर्पण किया और 3 अफसरो और 25 जवानो को लेकर बम्बई से जलयात्रा आरम्भ की। समस्त यात्रा में उनका बेड़ा खराब मौसम, तूफानी समुद्र और मशीनरी के खराब होते रहने के विरुद्ध कार्यरत रहा। यह छोटा जलयान कभी-कभी उलटते-उलटते बचा और एक बार तो उसे मरम्मत के लिये वापस तट पर ले जाना पड़ा। एक बार स्थिति इतनी खराब हो गयी थी कि ऐसा विचार किया जाने लगा कि कर्मिदल को दूसरे बड़े जलयान में भेज दिया जाय और उस जलयान को बड़े जलयान के साथ रस्सी से बाध कर अरक्षित रखा जाय। कमाण्डर रैली ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया और वह उस जलयान को लेकर चले और अन्त मे उसे निर्दिष्ट स्थान पर सुरक्षित ले आये।

कमाडर रैली ने भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओ के अनुकूल प्रशसनीय साहस और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

2. लैफ्टिनेन्ट राजेन्द्र सिह ग्रेवाल, भारतीय नौसेना जहाज, विक्रान्त।

24 फरवरी 1964 को 19—30 बजे जब भारतीय नौसेना जहाज़ विक्रान्त कोलम्बो के दक्षिण-पश्चिम दिशा मे 60 मील की दूरी पर था लैफ्टिनेन्ट ग्रेवाल एक एलीज वायुयान को लेकर उड़े। उड़ने के तुरन्त बाद ही वायुयान की सारी विद्युत व्यवस्था खराब हो गई जिसके परिणामस्वरूप चालक स्थान मे रोशनी या क्षितिज संकेत न रहा। लैफ्टिनेन्ट ग्रेवाल किसी भी यन्त्र को पढने मे समर्थ न हो सके और ना ही विमान वाहक या अन्य किसी भी हवाई स्टेशन के साथ सम्पर्क स्थापित कर सके। कुशल वायु सैनिक की तरह वह वायुयान को उडाते चले गये और सीलोन के एक हवाई क्षेत्र के ऊपर पहुच गये तथा हवाई क्षेत्र मे दौड-पथ दिखाने के लिये किसी सकेत एव उतरने के प्रकाश बिना भी वह सुरक्षित नीचे उतर आये जब उन्हे यह आभास हुआ कि नीचे दौड-पथ पर एक दूसरा वायुयान है, उन्होने अपने वायुयान पर इतनी जोर से ब्रेक लगाया कि उसके चारो टायर फट गये। इसके बावजूद भी उन्होने वायुयान को अपने नियन्त्रण मे रखा और सुरक्षित स्थान पर उसे उतारा ? लैफ्टिनेन्ट ग्रेवाल के उत्साह और कौशल को ही इस बात का श्रेय है अन्यथा वह वायुयान अपने हवाई कर्मियों के साथ खो गया होता।

लैफ्टिनेन्ट राजेन्द्र सिह ग्रेवाल ने भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओ के निर्वहन मे शान्त स्वभाव एव साहस का परिचय दिया।

3 सब-लैफ्टिनेन्ट (एस डी) (टी० ए० एस०) नारायणन् श्रीधरन नायर।

दिसम्बर 1963 मे हीराकुड बाध के अधिकारियो की शीघ्र प्रार्थना पर सब-लैफ्टिनेन्ट नायर की कमान के अधीन एक गोताखोर टीम छिप्पलिमा पावर हाउस भेजी गई। उसके ड्राफ्ट ट्यूब गेटो को सील करना था ताकि टर्बाइन कूप से पानी बाहर निकाला जा सके और दोषयुक्त टर्बाइन यूनिट को बदला जा सके। पानी की तेज धारा और भवर पैदा होने के कारण यह काम और भी कठिन हो रहा था। सामान्य स्थिति मे तो यह काम तभी आरम्भ किया जाना था जब कि पावर हाउस को बिल्कुल बन्द कर दिया जाता। अत्यन्त भयकर परिस्थिति के होते हुए भी सब-लैफ्टिनेन्ट नायर ने एक साहसी निर्णय किया और गेट के एक कोने से रस्सी की सहायता से गोताखोरी का काम आरम्भ किया। उनके निरीक्षण में टर्बाइन कूप में से पानी बाहर निकाला गया और दोषयुक्त टर्बाइन यूनिट को बदला गया।

जनवरी 1964 मे तुगभद्रा बांध अधिकारियो ने पावर हाउस मे एक और टर्बाइन यूनिट को चालू करने के लिये गोताखोरी सहायता मांगी। सब-लैफ्टिनेन्ट नारायणन् श्रीधरन नायर ने पेनस्टाक गेट और ड्राफ्ट ट्यूब गेट को खोलने के लिये काफी गोताखोरी का काम किया और 95 फुट तक की गहराई तक ध्वस करने के लिये पेन-स्टाक गेट के अन्तर्जलीय गाइड पट्टियो का निरीक्षण किया और सारे काम को बहुत जल्दी ही पूरा कर दिया।

एक और अवसर पर उन्होने तुगभद्रा मे सिचाई नहर के नकली गेट को हटाने के लिये पानी के अन्दर काटने और ढालने का काम किया तथा पैनस्टाक गेट पट्टियो की खराबियो को दूर करने का काम किया। उन्होने जान-बूझ कर सकट मे पड़कर विपरीत मौसम मे गैस नकाब की सहायता से गोते लगाने का तथा द्वार को हटाने का काम हाथ में लिया।

इन समस्त कार्यवाहियो मे सब-लैफ्टिनेन्ट नारायणन् श्रीधरन नायर ने जिस साहस, नेतृत्व एव कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया वे भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओ मे से हैं।

4 चीफ पेटी अफसर (जी आई) राम नाथ (ओ० न० 39908)

3 मार्च 1964 को नौसेना गैरिसन की न० 1 लडाकू प्लाटून को अण्डमान और निकोबार के कुछ छोटे द्वीपसमूहो का प्रारम्भिक सर्वेक्षण कार्य पर लगाया गया था। लगभग 19—30 बजे इस प्लाटून के हैडक्वाटर ने अपने एक सैक्शन से एस० ओ० एस० सिगनल प्राप्त किया। चीफ पेटी अफसर राम नाथ को एक स्थानीय नाव लेकर घटनास्थल पर शीघ्र पहुचने के लिये कहा गया। वहा पहुचने पर उन्होने देखा कि कुछ नाविक कमर तक के पानी मे दल-दल मे फसे हुए है तथा वे वहा से बाहर निकलने में असमर्थ है। पूर्ण अन्धकार था तथा ज्वार बहुत तेजी से बढ़ रहा था और दल-दल में फसे हुए व्यक्तियों का डूब जाने का बडा भय था। चीफ पेटी अफसर रामनाथ ने एक छोटी नाव पकडी और दल-दल मे फसे आठ व्यक्तियो का उद्धार किया। इस काम को करते हुए दो बार उनकी नाव उलट गई थी परन्तु प्रत्येक अवसर पर उन्होने नाव को सही दशा मे लाकर उसमे से पानी बाहर निकाला और उद्धार कार्य को जारी रखा। यद्यपि नाव बहुत छोटी थी और उसमे केवल दो व्यक्ति ही आ सकते थे तथापि उन्होने शेष व्यक्तियो को नाव के दोनो ओर लटकाते हुए बडी कुशलता के साथ नाव को सुरक्षित स्थान मे ले जाने मे सफलता प्राप्त की।

चीफ पेटी अफसर राम नाथ ने जिस साहस एव कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया वे भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओ मे से है।

5 लीडिंग सीमैन हरीश सिह बिष्ट (ओ० न० 46991)

दिसम्बर 1963 मे हीराकुड के अधिकारियो की प्रार्थना पर छिप्पलिमा बिजली घर को एक गोताखोर टीम भेजी गयी। इसको ड्राफ्ट ट्यूब गेटो को सील करना, टर्बाइन कुये से पानी निकालना, और दोषपूर्ण टर्बाइन यूनिट को बदलने का काम करना था। पहले तो बाध अधिकारियो ने काम आरम्भ किया परन्तु वे टर्बाइन कुए का पानी बाहर नही निकाल सके क्योकि द्वार 30 फुट तक सुरग के अन्दर गया हुआ था और वहां पानी में तेज तरंगें और भंवर उठ रहे थे। सामान्य स्थिति मे यह काम तभी किया जाता जब कि बिजली घर को पूरी तरह

से बन्द किया जाता । लीडिंग सीमैन विष्ट ने इस कार्य के लिये स्वयं को अर्पित किया और रस्सी की सहायता से वहां पहुंच कर उन्होंने द्वार को सील किया ।

पुन तुंगभद्रा बांध को भेजे गये एक टीम के सदस्य के रूप मे उन्होंने पानी के नीचे गाइड पट्टियों का निरीक्षण करने, पैन-स्टाक गैट और 95 फुट की गहराई तक के ड्राफ्ट ट्यूब गेटों को खोलने के लिये गोते मारे। उन्हे कोयना बांध मे पानी के नीचे निरीक्षण करने और अवरोधों को दूर करने के लिये भी भेजा गया ।

मई-जून 1964 में गोताखोर दल के एक सदस्य के रूप मे उन्हे तुंगभद्रा बांध में एक सिंचाई नहर के नकली गेटों को हटाने के लिये, अन्तर्जलीय कटाव तथा झालने का काम करने के लिये और पैन-स्टाक गेट गाइड पट्टियों की खराबियों को दूर करने के लिये भेजा गया, लीडिंग सीमैन विष्ट ने एक गैस नकाब पहिन कर विपरीत मौसम होने पर भी गोताखोरी का कार्य किया और गेट पर लगे हुए कुण्डों को काट कर उसे वहां से हटाया ।

इन समस्त कार्यवाहियों में लीडिंग सीमैन हरीश सिंह विष्ट ने जिस साहस, दृढ़ निश्चय तथा साधन सम्पन्नता का परिचय दिया वे भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओं मे से है ।

6. एवल सीमैन सुनिल कुमार चटर्जी (ओ० सं० 45227) गोताखोर 2

अगस्त 1964 में गुजरात विद्युत बोर्ड ने बड़ौदा के पास एक थर्मल पावर स्टेशन में पानी पहुंचने में रुकावट पैदा करने वाले बहुत से शीट पायलों को हटाने के लिये एक नौसैनिक गोताखोर दल की सहायता मांगी । इस काम को करने के लिये पानी के अन्दर पड़े हुए बहुत से शीट पायलो को हटाने के लिये अक्सीजन आर्क अन्डर वाटर कटर का प्रयोग करने की आवश्यकता थी । इस काम को जल्दी करने के लिये बहुत सा काम अन्धेरे मे करने की आवश्यकता थी क्योकि उस स्थिति मे ज्वार भाटीय स्थिति उसके लिये अनुकूल थी ।

एवल सीमैन गोताखोर चटर्जी ने इस काम के लिये स्वयं को अर्पित किया । यद्यपि आक्सीजन आर्क और अन्डर वाटर कटर मे उन्हें बहुत बार बिजली के धक्के लगे तथापि वे पूर्ण दृढ निश्चयता से लगातार काम करते रहे । कभी-कभी अच्छी तरह देखा भी नही जाता था और टार्च के कटिंग फ्लेम को देखना भी उनके लिये कठिन था ।

इन सब कठिनाइयों के बावजूद भी एवल सीमैन गोताखोर सुनिल कुमार चटर्जी ने बहुत जल्दी ही इस काम को पूरा किया तथा पावर स्टेशन पूरी तरह से काम करने लगा ।

एवल सीमैन सुनिल कुमार चटर्जी ने साहस तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

7. ए वी (यू सी 3) गजानन भीकाजी अभयकर (ओ० सं० 49267)

27 फरवरी 1964 को लगभग 1600 बजे एक अग्रिम टोह दल भारतीय नौसेना जहाज अक्षय से एक प्रहार नौका की सहायता से ग्रेट निकोबार टापू के कसुरिना खाड़ी में प्रारम्भिक टोह कार्य के लिये उतरी । अपने कार्य के पूर्ण हो जाने पर जब दल अपने उतरने वाले स्थान पर वापस आया तो देखा कि तट में अधिक झाग और भग्नोमिया थी । उन्होने उससे बचने के लिये तीन बार प्रयास किया परन्तु प्रत्येक बार नौका उलट गयी एवं समस्त व्यक्ति तट मे फस गये । जब अन्धकार हो जाने पर भी वे लोग वापस नहीं आये तो सकटग्रस्त व्यक्तियों की रक्षार्थ भारतीय नौसेना ने एक नौका भेजी । उस बचाव नौका को तट से कुछ अन्तर पर लंगर डालकर उन भग्नोमियों और महातरंगों को हटाना था । शार्कों से युक्त तथा झाग एवं भग्नोमियों से पूर्ण जल की चिन्ता न करते हुए एवल सीमैन अभयंकर बचाव नौका तक तैर कर गये तथा कुछ बचाव दल के साथ वह उस स्थान पर तैर कर गये जहां पर संकटग्रस्त व्यक्ति उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । बचाव नौका के साथ एक रस्सी स्थापित की गयी और सभी कर्मचारियो, उपकरणों एवं प्रहार नौका को भग्नोमियों को हटाते हुए सुरक्षित स्थान पर लाया गया ।

यह नवयुवक नाविकतट के बचाव नौका तक तैर कर आये और एक से अधिक वार वापस गये और उस समय तक बिना चैन लिये बचाव कार्य करते रहे जब तक कि समस्त टोह दल सुरक्षित स्थान पर न लाया गया ।

एवल सीमैन जगानन भीकाजी अभयंकर ने जिस साहस, सहन शक्ति एवं कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया वह भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओं में से है ।

स 20-प्रेज/65—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्यपरायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य मे उनको "वायु सेना मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते है :—

1 विंग कमाडर भूपिन्द्र सिंह (3025), जी० डी० (पी) ।

विंग कमांडर भूपन्दिर सिंह जो कि एक अनुभवी पाईलट है इस समय एक लड़ाकू जेट स्क्वाड्रन की कमान कर रहे हैं । उन्हे नाट हवाई जहाज से ऊंचाई पर परीक्षणात्मक उड़ान करने का कार्यभार सौपा गया था । ऊंचाई पर हवाई जहाज की प्रतिक्रियाओं के उचित आंकड़ों के उपलब्ध न होने के कारण कार्य बहुत ही दुश्कर था । इन सब बाधाओं के होते हुए भी विंग कमांडर सिंह ने साहस तथा व्यवसायिक कुशलता से एक बहुत ही ऊंचे स्थान तथा दुर्गम पहाड़ी भूप्रदेश में स्थित हवाई अड्डे से परीक्षणात्मक उड़ानें कीं । इस प्रकार जो विवरण परीक्षण के उपरान्त एकत्रित किये गये उनका भविष्य में पश्चिमी भाग में युद्ध सम्बन्धी सैक्रियाओं पर बहुत गहरा प्रभाव रहेगा । लद्दाख के एक ऊंचे हवाई अड्डे पर से जेट फाइटर की संक्रिया भारतीय वायु सेना के इतिहास में एक विशेष स्थान रखेगी ।

विंग कमांडर भूपिन्दर सिंह ने साहस तथा उच्च श्रेणी की जिस व्यवसायिक कुशलता का प्रदर्शन किया वह भारतीय वायु सेना की उच्चतम परम्परा के अनुकूल है ।

2. स्क्वाड्रन लीडर आशातीत चकवर्ती (3662) जी० डी० (पी) ।

स्क्वाड्रन लीडर चक्रवर्ती अगस्त 1961 से जम्मू तथा काश्मीर क्षेत्र में संक्रियात्मक परिवहन सहायता के कार्य में लगे हुए है । उन्होंने 6018 घन्टे की उड़ानें कीं जिस में 1023 घन्टे की संक्रियात्मक उड़ानें भी है । उन्होंने अग्रिम क्षेत्र में अनेकों अवतरण किये तथा संसार के एक सब से ऊंचे हवाई अड्डे में उतरने वाले यह सर्व प्रथम थे । अपने घाटियों के विषय में विस्तृत ज्ञान के कारण उन्होंने अनेकों जूनियर वायुयान चालकों को अग्रिम क्षेत्रों में उड़ने के विषय में आदेश दिये ।

समस्त संक्रियात्मक उड़ानों में स्कवाड्रन लीडर आशातीत चकवर्ती ने साहस, व्यवसायिक कुशलता तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

3. स्क्वाड्रन लीडर गुरदीप सिंह (3944), जी० डी० (पी) ।

स्क्वाड्रन लीडर गुरदीप सिंह लद्दाख में एक परिवहन यूनिट के फ्लाईट कमाडर है । अपात समय की घोषणा के पश्चात प्रशासनिक उत्तरदायित्वों के साथ-साथ उन्होंने अपने अधीन पाईलटों की उड़ानें लेने के पूर्व स्वयं अनेकों कठिन उड़ानें कीं अभी तक उन्होंने 4,000 घण्टों से भी अधिक उड़ानें की हैं जिसमें 1200 घन्टों की अग्रिम क्षेत्र की उड़ानें भी हैं । उन्होंने अग्रिम स्थानों पर अनेकों सम्भरण उड़ानें भी कीं ।

स्क्वाड्रन लीडर गुरदीप सिंह उन अनुभवी पाईलटों में से हैं जिन्होंने 1962 और 1963 में चुशूल तथा लेह में टैंकों को पहुंचाया। हाल में जब एक वायुयान लेह में इंजन की खराबी के कारण पड़ा था वह उसे उस क्षेत्र में से ले आये। उन्होंने अपने स्क्वाड्रन में प्रशिक्षक अफसर का काम भी किया और असाधारण सफलता प्राप्त की।

समस्त कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर गुरदीप सिंह ने भारतीय वायु सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल उच्च स्तर की व्यवसायिक कुशलता एवं कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. स्क्वाड्रन लीडर कृष्णास्वामी सुब्रामनियन (4213), जी० डी० (एन)।

स्क्वाड्रन लीडर सुब्रामनियन एक भारी परिवहन स्क्वाड्रन के नेवीगेटर लीडर हैं। उन्होंने 4650 घन्टो की उड़ानें की है जिस में 1143 घन्टों की आपनकालीन संक्रियात्मक उड़ानें भी हैं। उन्होंने जूनियर नेवीगेटरों को प्रशिक्षित किया तथा कठिन उड़ानों के लिये स्वयं को अर्पित किया।

2 जून 1962 को जब स्क्वाड्रन लीडर सुब्रामनियन सामान गिराने के कार्य में लगे थे, एक पैराशूट वायुयान में ही खुल गया जिसके कारण वायुयान की ऊंचाई को कायम रखना कठिन हो गया। शांति के साथ उन्होंने तुरन्त आपत निष्काशन का उपयोग किया तथा किसी प्रकार का समय नष्ट किये बिना सारा सामान गिराया।

अक्तूबर 1962 में उनका वायुयान चीनी सैनिको की भीषण गोलाबारी में आ गया। निर्भीक होकर उन्होंने अपनी स्थिति को सम्भाला तथा उच्च अधिकारियो को अति आवश्यक सूचनायें दी जो कि कमांडरों के लिये अति मूल्यवान सिद्ध हुई।

समस्त कार्यवाहियों मे स्क्वाड्रन लीडर कृष्णास्वामी सुब्रामनियन ने जिस उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता, साहस तथा व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया है वह भारतीय वायु सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल है।

5. स्क्वाड्रन लीडर रथीन्द्र कुमार बसु (3968), जी० डी० (पी)।

स्क्वाड्रन लीडर बसु अप्रैल 1961 से जम्मू तथा काश्मीर क्षेत्र की भारी परिवहन स्क्वाड्रन के उड़ान अधिकारी हैं। उन्होंने 4900 घन्टे की उड़ानें की है जिसमें 1400 घन्टे की संक्रियात्मक उड़ानें भी है। उन्होंने 300 संक्रियात्मक सम्भरण मिशनों में भी भाग लिया और 200 बार लेह और चुशूल जैसे उच्च स्थलों पर अवतरण किया।

स्क्वाड्रन लीडर बसु को अपनी टुकडी के नये वायुयान चालकों को अग्रिम क्षेत्रों मे परिचायक संक्रियात्मक परीक्षण देने का कार्यभार सौपा गया था तथा उन्होंने अपनी कठिन कार्यक्षमता और उच्च व्यवसायिक कुशलता के कारण उसे सफलतापूर्वक पूर्ण किया। उन्होंने कठिन और बड़े कार्य के लिये सदा अपने आपको अर्पित किया और इस प्रकार अपने अधीनस्थ व्यक्तियों के सम्मुख सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया।

स्क्वाड्रन लीडर रथीन्द्र कुमार बसु ने साहस, नेतृत्व तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

6. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट पुरुषोत्तम लक्ष्मीकान्त पुरोहित (4581) जी० डी० (पी)।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट पुरोहित 1957 से जम्मू तथा काश्मीर में वायु परिवहन सम्भर संक्रियाओं में संलग्न हैं। उन्होंने इस क्षेत्र में लगभग 1000 घन्टे की संक्रियात्मक उड़ानें की है।

अप्रैल 1962 में जब उनका स्क्वाड्रन उस क्षेत्र से जाने लगा तो फ्लाइट लेफ्टि० पुरोहित ने आने वाले स्क्वाड्रन को अपने विस्तृतज्ञान का लाभ देने के लिये अपने आप को स्थानान्तरण के लिये अर्पित किया। अपने संक्रियात्मक दौरों के अन्तर्गत उन्होंने भारी सामान लेकर अग्रिम क्षेत्रों में 160 उड़ानें की। वह दूसरे कर्मियों के लिये सदैव प्रेरणा के स्रोत थे।

समस्त कार्यवाहियों मे फ्लाइट लेफ्टि० पुरुषोत्तम लक्ष्मीकान्त पुरोहित ने साहस, पहल तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

7. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अमर जीत सिंह सन्धू (4705), जी० डी० (पी)।

10 मार्च 1964 को जब फ्लाइट लेफ्टि० सन्धू नाट वायुयान के एक संगठन मे उड़ान कर रहे थे उन्हे अनुभव हुआ कि इंजन मे अग्नि भड़कने के साथ-साथ विद्युत पूर्णतया बन्द हो गई और पिछले तल की संक्रिया का ह्रास हो गया है। इस विषम स्थिति में उनके सम्मुख स्वयं को निकाल कर जहाज को छोड़ देने के अथवा वायुयान का शीघ्र तत्क्षण अवतरण "डेड स्टिक" करने के अतिरिक्त और मार्ग न था। आवश्यक शक्तियों के ह्रास होने पर भी उन्होंने बहुमूल्य वायुयान को नष्ट होने से बचाने के लिये बाद का मार्ग अपनाया।

यह प्रथम अवसर था जब कि नाट वायुयान का तत्क्षण, अवतरण किया गया। फ्लाइट लेफ्टि० सन्धू ने तकनीकी स्टाफ के लिये इंजन से अग्नि प्रज्वलन के दोष को निश्चय करना भी सम्भव कर दिया जो यदि अज्ञात रहता तो भविष्य मे भयंकर दुर्घटना का कारण बनता।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अमर जीत सिंह सन्धू ने जिस साहस, व्यवसायिक कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया वह भारतीय वायुसेना की उच्चतम परम्पराओ के अनुकूल है।

8. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट त्रिवोर कीलर (4818), जी० डी० (पी)।

5 फरवरी 1964 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कीलर को एक नाट संगठन में जिसमें 5 वायुयान थे पूना से पालम उड़ने के लिये नियुक्त किया गया। उड़ान का अन्तिम भाग 41,000 फीट की ऊंचाई मे पार करना था।

जब वह पालम पर अवतरण कर रहे थे तो उन्हे लगभग 15,000 फीट की ऊंचाई पर पता लगा कि इंजन से थ्रोटिल गति पर कोई प्रतिक्रिया नही हो रही है। नेता को सूचित करने के पश्चात् फ्लाइट लेफ्टि० कीलर तुरन्त ही गुट से अलग हो गये तथा यह जानते हुए भी कि पहले के नाटों के आपात अवतरण का परिणाम मृत्यु या गम्भीर चोट था पालम पर अवतरण करने का प्रयत्न किया। महान प्रत्युत्पन्न मति तथा सावधानी के कारण वह वायुयान को बिना कोई हानि हुए सफलतापूर्वक आपात अवतरण में सफल हुए।

फ्लाइट लेफ्टि० कीलर ने भारतीय वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस, प्रत्युत्पन्न मति तथा उच्च स्तर की व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया।

9. स्क्वाड्रन लीडर भगत सिंह कालरा (4492), जी० डी० (पी)।

अक्तूबर-नवम्बर 1962 के मध्य उत्तर पूर्वी सीमान्त क्षेत्र में स्क्वाड्रन लीडर भगत सिंह कालरा हैलीकोप्टर की एक छोटी सी टुकड़ी का नियन्त्रण कर रहे थे तथा इस अल्प समय के मध्य उन्होंने 300 संक्रियात्मक उड़ानें भरी।

21 अक्तूबर 1962 को इन्होंने एक भयंकर स्थिति का शीघ्र और ठीक-ठीक पता करने मे एक घोर विपत्ति को आने से रोका। पांच हेलिकोप्टर सैनिको को अग्रवर्ती क्षेत्र में पहुंचाने का काम कर रहे थे। उन हेलिकोप्टरों में से एक में पूर्वी कमान के जी ओ सी-इन-सी यात्रा कर रहे थे। अग्रिम क्षेत्र को जाते हुए फ्लाइट लेफ्टि० कालरा को एक दूसरे वायुयान के कैप्टन द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि आगे एक सैनिक चौकी में बड़ी गोलाबारी चल

रही है। असाधारण रूप से सैनिकों के संचलन को देख कर उन्होंने सभी हैलिकोप्टरों को आदेश दिया कि वे सभी वापस अपने बेस पर जाय और इस प्रकार उन्होंने उन हैलिकोप्टरों को और उसके अन्दर बैठे हुए कार्मिको को बचाया।

23 अक्तूबर 1962 को प्रातः से सायंकाल तक फ्लाईट लेफ्टि० कालरा ने वायुयान द्वारा 300 औरतों और बच्चो को तावाग से सुरक्षित बाहर निकाला। एक अन्य अवसर पर भी उन्होंने उन दो वायु सेना के अफसरो को बचाया जिनके हेलि-काप्टर को चीनियों की गोली लगने पर नीचे उतरना पड़ा था।

समस्त कार्यवाहियो म फ्लाईट लेफ्टि० भगत सिंह कालरा ने जिस अत्यन्त उच्च कोटि के कर्त्तव्य बोध तथा व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया वह भारतीय वायु सेना की उच्चतम परम्पराओ के अनुरूप है।

10. फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट हिल्टन नोइल बर्न (5046), जी० डी० (पी)।

फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट बर्न सितम्बर, 1962 से नेफा में कार्यवाही करने वाली एक हेलिकाप्टर यूनिट के फ्लाईट कमाडर है। उन्होने इस क्षेत्र मे 2 साल से कम समय मे 1000 घंटो से अधिक उड़ानें की है और कठिन पर्वतीय भूप्रदेश में स्थित अवतरण पट्टिकाओ पर लगभग 750 अवतरण किये है। उन्होने विभिन्न कार्य, जैसे सेना तथा सामान का ढोना, हेलिकाप्टर के नये अवतरण क्षेत्रों मे परीक्षात्मक अवतरण तथा अपरिचित पर्वतीय भूप्रदेश तथा प्रतिकूल मौसम में, नये जूनियर पाइलटों का मार्जन आदि, सम्पन्न किये। उन्होंने एम आई 4 हेलिकाप्टर मे परीक्षात्मक उडाने की तथा उसकी संक्रियात्मक उपयोगिता का मूल्यांकन किया। इसमे सेना का ढोना, सामग्री का गिराना, सामान का बाहर ले जाना तथा जवानो को रस्सियों से उतारना इत्यादि भी सम्मिलित है।

फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट हिल्टन नोइल बर्न ने साहस, दृढ़ संकल्प तथा उच्च स्तर के व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया।

11. फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट मोहन धर्मदास ललवानी (5658), जी० डी० (पी)।

फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट ललवानी 1961 से लद्दाख मे एक हेलिकाप्टर स्क्वाड्रन के पाईलट कमाडर का कार्य कर रहे है। कठिन पर्वतीय क्षेत्रो में स्थित अवतरण पट्टिकाओ पर लगभग 1000 बार अवतरण करने का उनका प्रशंसनीय रिकार्ड है। अक्तूबर-नवम्बर 1962 में उत्तरी सीमाओं पर चीनी आक्रमण के मध्य उन्होंने अनेक कठिन कार्य किये है। फ्लाईट कमांडर के कार्य-भार के साथ-साथ उन्होंने उन जूनियर पाईलटो के प्रशिक्षण का कार्य भी किया जो उस भूप्रदेश से अपरिचित थे और संक्रियाओ के विषय में जिन्हे अनुभव नही था। उन्होने स्क्वाड्रन कमांडर को योजना बनाने तथा यूनिट को दिये गये कार्यों को करवाने मे सहायता दी।

समस्त कार्यवाही मे फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट मोहन धर्मदास ललवानी ने उच्च व्यवसायिक कुशलता, साहस एवं कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

12. फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट राकेश टंडन (5391), जी० डी० (पी)।

उत्तर-पूर्वी सीमान्त क्षेत्र मे एक हेलिकाप्टर यूनिट के फ्लाईट कमांडर के रूप में फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट टंडन अग्रिम अवतरण भूमि हवाई क्षेत्रो में 900 से अधिक बार उतरे तथा उन्होंने 1000 घंटों से अधिक उड़ानें की है।

16 मई, 1964 को जब एक हेलिकाप्टर एक अवतरण पट्टिका पर उतरने का प्रयास कर रहा था तो उसके अग्रिम भाग के इलियोज (Eleos) भूमि में धंस गये जिसके फलस्वरूप वे बुरी तरह पीछे की ओर मुड़ गये। संकट में पड़े रहने का अनुभव करते हुए चालक वहां उतरना छोड़ कर वापस अपने बेस की ओर उड़ा। इसकी सूचना फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट टंडन को दी गयी जो अपने हेलिकाप्टर को उड़ा रहे थे। वह तुरन्त ही नीचे उतरे तथा उस हेलिकाप्टर की ओर जिसे अवतरण पट्टिका के ऊपर घूमते रहने का अनुदेश दिया गया था, की क्षति का अनुमान करने के लिये, अग्रसर हुए। उन्होंने टायर तथा पीपे आदि बिछा कर एक ऐसे कोमल अवतरण क्षेत्र की व्यवस्था की जो वायुयान को नीचे उतरने, में सहायता दे। उन्होंने ऊपर घूमते हुए हेलिकाप्टर को अनुदेश दिया कि वह रस्सियों की सीढ़ी को नीचे गिराये जिसके द्वारा वह उस क्षतिग्रस्त वायुयान पर चढ़े और उसका नियन्त्रण स्वयं अपने हाथ में ले लिया। उन्होने कुशलतापूर्वक उस हेलिकाप्टर को उस तैयार किये हुए स्थान पर सुरक्षित रूप से उतारा तथा इस प्रकार उन्होने हेलिकाप्टर तथा उसमें बैठे हुए व्यक्तियो की रक्षा की।

फ्लाईट लेफ्टिनेन्ट राकेश टंडन ने भारतीय वायु सेना की उच्चतम परम्पराओ के अनुरूप पहल शक्ति एवं उच्चस्तर की व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया।

13. फ्लाइंग अफसर जगबीर सिंह राय (6507), जी० डी० (पी)।

फ्लाइंग अफसर जगबीर सिंह राय एक लाजिस्टिक सहायता स्क्वाड्रन के साथ नेफा में कार्य कर रहे है। उन्होंने लगभग 600 संक्रियात्मक उड़ाने की तथा अग्रिम हवाई अड्डों और अवतरण पट्टिकाओं पर करीब 500 अवतरण किये।

29 फरवरी, 1964 को फ्लाईंग अफसर राय नेफा में दिनजान में टूटिंग की संक्रियात्मक उड़ान पर थे। जब वायु-यान ऊंची पहाड़ी तथा बर्फ से ढकी चोटियों से घिरी हुई एक नदी की घाटी में पहुंचा तो फ्लाइंग अफसर राय ने इंजन में भारी आवाज सुनी तथा उन्हे शक्ति के सहसा ह्रास होने का अनुभव हुआ। यह जानकर कि वहां पर अवतरण के लिये कोई उचित स्थान नही है वह शीघ्रता से पासीघाट के निकट हवाई अड्डे की ओर पीछे लौटे। जब वह वहा से लगभग 10 मील दूर थे उनके इंजन में आग लग गई तथा घने धुये तथा तेल के कारण सामने का शीशा पूर्णतया घिर गया। यद्यपि धुयें के कारण सास रुक सी गयी तथापि उन्होंने अग्नि पर अधिकार करने की चेष्टा की। अन्त में वायुयान को एक छोटी नदी की घाटी मे गिरा दिया जिसके कारण उन्हें हाथो तथा पैरों में गम्भीर चोटें आई। वह स्वयं वायुयान के भग्नावशेष से निकले और घिसट कर पास के जलकुंड तक पहुचे तथा वहां तब तक रहे जब तक वहां से लाये नही गये।

फ्लाइंग अफसर जगबीर सिंह राय ने साहस तथा उच्च कोटि की व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया।

14. 14491 मास्टर वारंट अफसर पुथियादथ नानू, सिगनलर (एयर)।

मास्टर वारंट अफसर पुथियादथ नानू सन् 1961 से जम्मू तथा काश्मीर क्षेत्र में भारी परिवहन स्क्वाड्रन के साथ कार्य कर रहे है। इससे पूर्व उन्होंने जम्मू तथा काश्मीर में दो दौरे किये और संक्रिया स्क्वाड्रन के साथ नेफा और नागा हिल्स में चार दौरे किये है। संकटकालीन स्थिति की घोषणा के उपरान्त उन्होंने स्वयं को कठिनतम उड़ानो के लिये अर्पण किया। उन्होंने कुल 6400 घन्टे की उड़ाने की है जिसमें लगभग 2600 घन्टे संक्रियात्मक उड़ाने है। अपने संक्रियात्मक अनुभव प्रथा घाटियों के विषय मे विस्तृत ज्ञान के कारण उन्होंने उस कार्य को जो उनकी यूनिट को दिया गया था पूरा करने में अधिक योगदान दिया। सिगनल लीडर को जूनियर सिगनलर्स के प्रशिक्षण में सहायता देने के साथ वह बहुधा स्क्वाड्रन कमांडर को योजना बनाने तथा

सक्रियाओ को कार्यान्वित करने म बहुमत्य सलाह देने थे। उनका व्यक्तिगत उदाहरण दूसरे सिगनलरो के लिये प्रेरणा का एक स्रोत था।

मास्टर वारट अफसर पुथियादथ नानू ने भारतीय वायु सना की उच्चतम परम्पराओ के निर्वहन मे साहस कर्त्तव्य-परायणता तथा उच्च स्तर की व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया।

15 47007 वारट सिगनलर कृष्णागिरी वेणुगोपाल कृष्णन, सिगनलर (वायु सेना)

वारन्ट सिगनलर कृष्णन 1961 म जम्म तथा काश्मीर मे एक भारी परिवहन स्क्वाड्रन के साथ कार्य कर रहे है। उन्होने 3000 से अधिक घटा की उडाने की है जिस म लगभग आधी अग्रिम स्थानो की उडाने है।

15 सितम्बर, 1961 को जब वह चुशूल मे उतर रहे थे तो उनके वायुयान का अगला पहिया पृथक हो गया। प्रशसनीय प्रत्युपन्नमति से उन्होने वायुयान को विद्युत अग्नि से बचाने के लिये विद्युत जनित्र बिजली की प्रत्यावर्तक धारा एव प्रमुख बैटरी को बन्द कर दिया। वह अग्नि शामक यन्त्र ले कर वायुयान से बाहर कूद पडे तथा वायुयान को चारो ओर से देखने लगे कि कही रगड से अग्नि तो नही लग रही है। वह उस समय तक वही खडे रहे जब तक कि वायुयान से सभी व्यक्ति नही उतर गये तथा दूसरे कर्मीदल ने उसको नही सम्भाल लिया।

4 मार्च, 1963 को जब वह लद्दाख म सम्भरण कार्य कर रहे थे उनका एक इलीवेटर तार टूट गया जिसे सामग्री गिराने का द्वार बन्द होने से रुक गया तथा केवल कुछ ही सामग्री गिरायी जा सकी। वारट सिगनलर कृष्णन तुरन्त वायुयान के पिछले भाग को कार्मिको द्वारा सामग्री के निष्काशन का निरीक्षण करने के लिये गये। उनमे से दो कार्मिक आक्सीजन की कमी से प्रभावित थे तथा सज्ञाहीन हो गये थे। उन्होने स्वय सामग्री का निष्काशन किया तथा द्वार बन्द कर दिये। यद्यपि वह थक गये थे तथापि वह निष्काशन कार्मिको को दाबानुकूलित कक्ष मे ले गये जहा उन्हे आक्सीजन दी गयी।

इस समस्त कार्यवाही मे वारट सिगनलर कृष्णागिरी वेणुगोपाल कृष्णन ने साहस तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

16 47055 वारट अफसर चाको जोसेफ, फ्लाईट गनर

वारट अफसर जोसेफ मन् 1961 से भारी परिवहन स्क्वाड्रन के साथ जम्मू तथा काश्मीर मे नियुक्त है। उन्होने अभी तक कुल 3500 घटे उडान की है जिस मे 1600 घटे लद्दाख क्षेत्र की सक्रिया उडाने भी सम्मिलित है। गनरी लीडर के कार्य के साथ-साथ उन्होने सफलतापूर्वक अपने जनियर गनरो को भी प्रशिक्षित किया तथा टुकडी के सक्रियात्मक कर्त्तव्य से परिचित कराया।

20 अक्तूबर, 1962 को जब कि वारट अफसर जोसफ उत्तरी सीमा पर सक्रिया कर रहे थे उनका यान चीनी सैनिको की भारी गोला-बारी मे आ गया। शातिपूर्ण साहस और व्यावसायिक कुशलता के साथ उन्होंने भूमि पर गन की स्थिति का पता लगा लिया तथा अपने कप्तान को ही चेतावनी नही दी अपितु उस क्षेत्र मे उडने वाले अन्य वायुयानो को भी सजग कर दिया। यह समाचार सैनिक अड्डे के अधिकारियो को भी प्रेषित किया गया। उनकी शीघ्र कार्यवाही के कारण दूसरे वायुयानो को होने वाली सम्भावित क्षति बचाई जा सकी।

वारट अफसर चाको जोसेफ ने भारतीय वायुसेना की उच्चतम परम्पराओ के अनरूप उच्च श्रेणी की व्यवसायिक कुशलता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

का० र० दामले राष्ट्रपति का सचिव

योजना आयोग

संकल्प

नई दिल्ली, दिनाक 26 फरवरी 1965

राष्ट्रीय योजना परिषद्

स० एफ० 15/1/65-समन्वय—योजना आयोग ने जब से काय करना आरम्भ किया, तब से ही वह पचवर्षीय योजनाओ की तैयारी और महत्वपूर्ण समस्याओ के अध्ययन मे अर्थशास्त्रियो वैज्ञानिको और तकनीकी एव अन्य विशेषज्ञो तथा सामाजिक कार्य मे अनुभवी व्यक्तियो की सहायता प्राप्त करता आ रहा है। सहायता प्राप्त करने हेतु, आयोग ने समय-समय पर, पैनलो, सलाहकार समितियो और अध्ययन-दलो का गठन किया। परन्तु भारत के आर्थिक विकास के साथ-साथ, विकास की समस्याए भी अत्यधिक जटिल हो गई हैं। अत यह अनुभव किया जाता है कि सलाह एव विचार-विनिमय की जो वर्तमान व्यवस्था है, उसके अतिरिक्त यदि विशेषज्ञो का एक ऐसा छोटा-सा सगठन हो जो योजना आयोग एव उसके सदस्यो के निकटस्थ तथा निरन्तर सहयोग से काम करे, तो अधिक उपयोगी होगा। इन तथ्यो को ध्यान मे रखते हुए सरकार ने निश्चय किया है कि एक राष्ट्रीय योजना परिषद् का गठन किया जाए। परिषद् का गठन निम्न प्रकार से होगा —

अध्यक्ष — उपाध्यक्ष, योजना आयोग।

सदस्य — योजना आयोग के सब सदस्य।
श्री एच० आर० भाटिया,
प्रिसिपल, थापर इस्टीट्यूट आफ इजीनियरिंग और तकनोलोजी, पटना।
श्री के० टी० चाडी,
निदेशक, भारतीय प्रबन्ध सस्थान,
कलकत्ता-50।
प्रो० पी० एन० धर,
निदेशक, आर्थिक विकास सस्थान,
दिल्ली-6।
श्री एम० वाई० घारपडे, एम० एल० ए०
सेन्दूर, जिला बेल्लारी, मैसूर।
डा० एम० एस० गोरे,
निदेशक, सामाजिक विज्ञाना का टाटा सस्थान,
चेम्बूर, बम्बई-71 ए० एस०।
श्री एन० डी० गुलहाटी,
140, सुन्दर नगर,
नई दिल्ली-11।
डा० ए० सी० जोशी
उप-कुलपति, पजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ।
डा० डी० एस० कोठारी,
अध्यक्ष,
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली।
श्री टी० एस० कृष्णा,
मैसर्ज टी० बी० सुन्दरम अय्यगार एण्ड सन्स,
(प्राइवेट) लिमिटेड
पी० ओ० न० 21
मदुराय-1 (मद्रास राज्य)।

श्री एस० मुलगावकर,
द्वारा टाटा उद्योग (प्राइवेट) लिमिटेड,
बम्बई हाउस, बुसस्ट्रीट,
फोर्ट, बम्बई-1 ।

श्री जी० पाण्डे,
उप-कुलपति, रुडकी विश्वविद्यालय,
रुड़की (उ० प्र०) ।

डा० जे० एस० पटेल,
उप-कुलपति,
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म० प्र०)

डा० एम० डी० पारेख,
राष्ट्रीय रेयन निगम लिमिटेड,
पो० औ० नं० 200,
बम्बई-1 ।

डा० विक्रम ए० साराभाई,
प्राध्यापक,
भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला,
अहमदाबाद ।

डा० एस० आर० सेनगुप्ता,
निदेशक,
भारतीय तकनालोजी संस्थान,
खड़कपुर ।

प्रो० एन० वी० सोवानी,
गोखले राजनीतिक एवं आर्थिक संस्थान,
पूना-4 ।

श्री एम० आर० वासवदा,
द्वारा, कपड़ा मजदूर संघ,
गांधी मजदूर सेवालय,
भद्रा, अहमदाबाद ।

संयुक्त सचिव, योजना समन्वय, योजना आयोग, परिषद् के सचिव होंगे ।

2. परिषद् योजना आयोग द्वारा या उसके किसी सदस्य द्वारा सुझाई गई समस्याओं पर व्यक्तिशः और समितियां के रूप में सदस्यों द्वारा अध्ययन की व्यवस्था करेगी । समितियो किसी विशेष समस्या के अध्ययन के लिए, अन्य विशेषज्ञो को भी संयोजित कर सकेंगी । परिषद् की पूरी बैठकें इसके सदस्यों द्वारा तैयार किए गए प्रतिवेदनों के अध्ययन के लिए समय-समय पर होंगी ।

3. फिलहाल, परिषद् का कार्यकाल दो वर्ष का होगा ।

4. परिषद् का मुख्यालय योजना भवन, नई दिल्ली में होगा । परन्तु परिषद् या उसकी उप-समितियों की बैठकें सदस्यों की सुविधा के अनुसार किसी अन्य स्थान पर भी हो सकेंगी ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी राज्य सरकारों, सभी राज्य सरकारों के मुख्य मंत्रियों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों, प्रधान मंत्री के सचिवालय, राष्ट्रपति के सचिव तथा विदेश मे सभी भारतीय दूतावासों के प्रमुखों को भेज दी जाएं ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित की जाए ।

त्रिभुवन प्रसाद सिंह, सचिव

संकल्प

नई दिल्ली, दिनाक 4 मार्च 1965

विषय : शिक्षा सम्बन्धी पैनल का पुनर्गठन

स० 1/4/62-शिक्षा—भारत सरकार सहर्ष सूचित करती है कि इस संकल्प के जारी होने की तिथि से डा० सी० डी० देशपाण्डे, शिक्षा निदेशक, महाराष्ट्र सरकार, पूना, शिक्षा सम्बन्धी पैनल से मनोनीत किए गए है ।

2 श्री ई० आर० दोंदे, शिक्षा निदेशक, महाराष्ट्र सरकार, पूना को योजना आयोग के संकल्प संख्या 1/4/62-शिक्षा, दिनांक 25 मई 1964 से शिक्षा सम्बन्धी पैनल का सदस्य नियुक्त किया गया था, परन्तु वे 20 जुलाई 1964 से पैनल के सदस्य नही रहे ।

आदेश

3 आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत सरकार के राजपत्र मे प्रकाशित किया जाए ।

4. यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति शिक्षा सम्बन्धी पैनल के सभी सदस्यो, सभी राज्य सरकारो, भारत सरकार के सभी मंत्रालयो, मंत्री मडल सचिवालय, समन्वय कार्य विभाग और प्रधान मंत्री सचिवालय को भेज दी जाए ।

दयाकृष्ण मल्होत्रा, संयुक्त सचिव

सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय
(सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, दिनाक 24 फरवरी 1965

स० 3-6/64-सी० एफ०—राष्ट्रीय सहकारी खेती सलाहकार बोर्ड के पुनर्गठन के बारे में भारत सरकार के तारीख 17 अक्तूबर 1964 के संकल्प संख्या एफ० 3-3/63-सी० एफ० के पैरा 5 पर अगली कार्यवाही करने के लिए भारत सरकार ने निम्न व्यक्तियों को बोर्ड की कार्यकारी समिति का सदस्य नियुक्त करने का निर्णय किया है :—

अध्यक्ष

श्री बी० एस० मूर्त्ति,
उप मंत्री,
सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय ।

सदस्य

1 श्री मथुरादास माथुर,
सहकारिता मंत्री,
राजस्थान सरकार ।

2. श्री इन्द्र जे० मल्होत्रा, संसद्-सदस्य ।

3. श्री एच० एम० पाटिल,
विष्णनाथ सहकारी खेती समिति,
घुलिया (महाराष्ट्र) ।

4. श्री जी० पी० जैन,
सम्पादक, सेवाग्राम, 1-दरियागंज, दिल्ली-6 ।

5. श्री एम० चक्रवर्ती, सचिव,
सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय ।

6. श्री डी० पी० सिंह,
संयुक्त सचिव (कृषि),
योजना आयोग ।

7 श्री अमीर रजा,
संयुक्त सचिव, कृषि विभाग,
खाद्य तथा कृषि मंत्रालय ।

सदस्य-सचिव

श्री एम० पी० भार्गव,
सहकारिता आयुक्त, सहकारिता विभाग,
सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि अधिसूचना की प्रतिलिपि सभी सम्बन्धित व्यक्तियों को भेजी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस अधिसूचना को भारत सरकार के राजपत्र में आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाए ।

एम० चक्रवर्ती, सचिव

उद्योग तथा संभरण मंत्रालय

(उद्योग विभाग)

[संशोधन

नई दिल्ली, दिनांक 2 मार्च 1965

स० 3-102/64-एम० ई० आई०—उद्योग तथा संभरण मंत्रालय के संकल्प सं० 3-102/64-एम० ई० आई०, तारीख 9 फरवरी 1965 के सन्दर्भ में जिसमें सीमेंट मशीनें बनाने वाले उद्योग की समस्याओं की जांच करने के लिए एक तकनीकी समिति गठित की गई थी ।

2. संकल्प के पैरा 2 की क्रम संख्या 4 में निम्नलिखित जोड़ दिया जाए :—

"4 श्री एम० के० सिन्हा तकनीकी विकास के महा-निदेशालय के औद्योगिक सलाहकार" ।

विद्यमान क्रम संख्या 4 और 5 की पुनः क्रम संख्या करके उनकी क्रम संख्या 5 और 6 कर दी जाए ।

3. पुनः संख्या की गई क्रम संख्या 5 में निम्नलिखित जोड़ दिया जाए :—

"8 मेसर्स एसोशियेटेड सीमेंट कम्पनीज़ लिमिटेड,
121, क्वीन्स रोड,
बम्बई ।"

[संकल्प

दिनांक 6 मार्च 1965

स० 1-2/63-एम० ई० आई०—बाल बेयरिंग उद्योग के लिये एक नामिका गठित करने हेतु इस्पात, खान तथा भारी इंजीनियरिंग मंत्रालय के संकल्प संख्या 1-2/63-एम० ई० आई०, तारीख 25 मार्च, 1964 के सन्दर्भ में ।

यह निश्चय किया गया है कि मेजर एम० सी० पटनी, ई० एम० ई०, मानकीकरण निदेशालय, मुख्यालय अनुसन्धान तथा विकास संगठन, रक्षा मंत्रालय भी बाल बेयरिंग उद्योग संबंधी नामिका के सदस्य होंगे ।

आदेश

आदेश दिया गया कि उपर्युक्त संकल्प की एक-एक प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों को भेज दी जाये और इसे भारत के गजट में प्रकाशित कराया जाये ।

हरबंस सिंह, उप-सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 5 मार्च 1965

स० 18 (3) प्रोड०/64—राष्ट्रीय उत्पादिता परिषद्, जिसको सोसाइटी पंजीयन अधिनियम, 1960 (1860 का 21वां) के अधीन पंजीबद्ध किया गया है, के नियमों के नियम 3 के अन्तर्गत भारत सरकार में निहित शक्तियों और उद्योग तथा संभरण मंत्रालय की अधिसूचना स० 18 (3) प्रोड०/64, तारीख 18 अगस्त 1964 का अधिलंघन करते हुए भारत सरकार एतद् द्वारा उपर्युक्त नियम के खंड (क) के अधीन श्री टी० एन० सिंह, उद्योग मंत्री को तात्कालिक प्रभाव से राष्ट्रीय उत्पादिता परिषद् का अध्यक्ष नाम-निर्देशित करती है ।

पी० एम० नायक, संयुक्त सचिव

खाद्य और कृषि मंत्रालय

(कृषि विभाग)

शुद्धि-पत्र

नई दिल्ली, दिनांक 4 मार्च 1965

स० 10-2/65-FAIT—भारत सरकार, खाद्य और कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) के प्रस्ताव संख्या एफ० 16-72/47 पालीसी दिनांक 8 नवम्बर, 1948 जिसमें समय-समय पर संशोधन हुए हैं, में राष्ट्रीय खाद्य एवं कृषि सम्पर्क समिति के गठन में निम्नलिखित संशोधन किये जाते हैं :—

राष्ट्रीय खाद्य एंव कृषि सम्पर्क समिति का गठन

"सदस्य" के शीर्षक के नीचे, "1 उपाध्यक्ष, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्" के पश्चात् निम्न को जोड़ा जाये :—
"1 निदेशक, केन्द्रीय खाद्य तकनौलौजिकल संस्थान, मैसूर अथवा उनका मनोनीत किया हुआ व्यक्ति ।"

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस अधिसूचना की एक प्रतिलिपि समस्त राज्य सरकारों, मुख्यायुक्तों लोकसभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, संसद कार्य विभाग, राष्ट्रपति के निजी तथा सैनिक सचिवों, मन्त्रिमण्डल सचिवालय, प्रधान-मन्त्री सचिवालय, भारत के महालेखा-परीक्षक, योजना आयोग, भारत सरकार के समस्त मन्त्रालयों, खाद्य एवं कृषि संगठन के मुख्यालय, रोम तथा खाद्य एवं कृषि संगठन क्षेत्रीय कार्यालय 1, रिंग रोड, किलोकरी, नई दिल्ली को भेजी जाये ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि सर्वसाधारण की जानकारी के लिए इस अधिसूचना को भारत सरकार के गजट में प्रकाशित कर दिया जाये ।

के० चटर्जी, अवर सचिव

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्

नई दिल्ली, दिनांक 24 फरवरी 1965

सं० 4-95/63-काम-4—भारतीय केन्द्रीय तम्बाकू समिति के उप-नियमों के उप-नियम XII (4) के अनुसार इस समिति के सन् 1962-63 के जांचे हुए प्राप्ति और अदायगी के लेखे, लेखा-परीक्षा रिपोर्ट सहित, जनसाधारण की सूचना के लिए प्रकाशित किए जाते हैं ।

भारतीय केन्द्रीय तम्बाकू समिति, मद्रास के सन् 1962–63 के लेखों की लेखा परीक्षा रिपोर्ट

सन् 1962-63 में समिति के प्राप्ति और अदायगी के मदों का मुख्य शीर्षकों के अन्तर्गत किया गया विश्लेषण नीचे दिया गया है :—

प्राप्तियां	(लाख रुपयों में)	अदायगियां	(लाख रुपयों में)
आरम्भिक शेष (ओपनिंग बैलेंस)	26 24	**समिति का प्रशासन** वेतन और भत्ते	1.91
भारत सरकार से प्राप्त अनुदान	13.00	आकस्मिक व्यय	1 71
			3.62
तृतीय पंचवर्षीय योजना की योजनाओं के लिए भारत सरकार से प्राप्त विशेष अनुदान	2 94	**तम्बाकू की खेती में सुधार** अनुसंधान केन्द्रों पर किया गया व्यय	9.89
निवेशों पर ब्याज	0.23	सहायक-अनुदान (ग्रांट्स-इन-एड)	2.09
			11.98

प्राप्तिया	(लाख रुपयो मे)	अदायगिया	(लाख रुपया मे)
वचनबद्ध व्यय योजनाओ मे प्राप्त राशि	0 85	तम्बाकू और इससे बने पदार्थों का विकास और सुधार	0 83
तृतीय पचवर्षीय योजना की योजनाओ मे प्राप्त राशि	0 16	वचनबद्ध व्यय योजनाए	0 87
भारतीय केन्द्रीय तम्बाकू समिति भविष्य निधि (प्राविडेट फड)	2 47	तृतीय पचवर्षीय योजना की योजनाए	4 51
समिति के प्रकाशनो से प्राप्त राशि	0 19	विविध	0 76
		इतिशेष	
		निवेश 22 06	
अन्य प्राप्तिया	1 47	अग्रिम धन अग्रदाय (इम्प्रेस्ट) 2 84	
		0 08	24 98
	47 55		47 55

सन् 1962-63 मे समिति ने राज्य सरकारो और अन्य सस्थानो को 4 93 लाख रुपए सहायक अनुदान के रूप मे दिए ।

विभिन्न अनुसधान केन्द्रो मे कार्य पूरा करने के लिए सन् 1951-52 से 1962-63 तक के 11 साल के समय मे समिति ने केन्द्रीय जन निर्माण विभाग और विद्युत् विभागो मे 38 01 लाख रुपये जमा किए । केन्द्रीय जन-निर्माण विभाग द्वारा किए गए कार्य के लिए अब तक केवल 31 39 लाख रुपये एकराशि (लम्पसम) रूप मे समजनित (एडजस्टेड) किय गये । प्रत्येक कार्य की विस्तृत सूचना अभी केन्द्रीय जन-निर्माण विभाग से प्राप्त नही हुई है । शेष 16 62 लाख रुपयो के विषय मे अभी कोई समजन नही किया गया है ।

तम्बाकू की खेती, व्यवसाय, सुखाने आदि के उन्नत तरीको के विषय मे प्रशिक्षण देने की योजना के अधीन राजामुन्द्री मे अनुमानित 2 80 लाख रुपये की लागत से एक छात्रावास (होस्टल) और एक व्याख्यान-कक्ष (लैक्चर हाल) बनाने के लिये अक्तूबर 1958 मे 11,077 रुपये का एक प्लाट खरीदा गया था । परन्तु इस पर अभी इमारत बनाने का कार्य शुरू नही किया गया है ।

दिसम्बर 1963 मे समिति द्वारा यह कहा गया था कि यह कार्य तृतीय योजना मे इसलिये सम्मिलित नही किया जा सका, क्योकि इससे सम्बन्धित प्रारम्भिक चित्र और अनुमानित खर्च का विवरण केन्द्रीय जन-निर्माण विभाग से केवल मार्च 1961 मे प्राप्त हुआ था । इस मामले को नीति तथा विस्तार उप-समिति ने सन् 1962-63 मे दोबारा से उठाया और सितम्बर 1963 मे केवल एक छात्रावास बनाने के लिए स्वीकृति दी गई । इस निर्माण-कार्य को देरी से शुरू करने के कारण यह अनुमान लगाया गया है कि लागत खर्च मे 56,306 रुपये की बढातरी हो जायेगी ।

समिति द्वारा यह कहा गया है (जनवरी 1964) की समिति के बजट मे सरकार द्वारा कटौती कर देने के कारण इस छात्रावास का निर्माण-कार्य भी स्थगित कर दिया गया है ।

(ह०) हुसैन आगा महालेखाकार

भारतीय केन्द्रीय तम्बाकू समिति

31 मार्च 1963 को समाप्त होने वाले वर्ष के प्राप्ति और अदायगी लेखे

प्राप्तिया	रु० पै०	रु० पै०	अदायगिया	रु० पै०	रु० पै०
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
1 आरम्भिक शेष (1 अप्रैल 1962 को)		26,23,555 78	1 समिति का प्रशासन		3,62,496 94
2 (क) सन् 1962-63 के लिए भारत सरकार द्वारा दिया गया सहायक अनुदान		13,00,000 00	2 तम्बाकू की खेती का सुधार		
(ख) तीसरी पचवर्षीय योजना मे सम्मिलित की गई योजनाओ के लिये भारत सरकार द्वारा दिया गया विशेष अनुदान		2,93,510 00	(क) अनुसंधान केन्द्रो पर किया गया व्यय :		
3 अन्य प्राप्तिया			1 केन्द्रीय तम्बाकू अनुसधानशाला, राजामुन्द्री	6,04,762 72	
(क) निवेशो पर ब्याज		22,566 00	2 सिगरेट तम्बाकू अनुसधान उप-केन्द्र, गुतूर	80,452 41	
(ख) अनुसधान केन्द्रो से प्राप्त प्राप्तिया			3 हुक्का तथा खाने के तम्बाकू का अनुसधान केन्द्र, पूसा	93,534 83	
1 केन्द्रीय तम्बाकू अनुसधानशाला, राजामुन्द्री	34,117 04		4 लपेटन (रैपर) तथा हुक्का तम्बाकू अनुसधान केन्द्र, दीनहाता	1,11,647 99	
			5 सिगार और चीरुट तम्बाकू अनुसधान केन्द्र, वेदासदुर	98 647 42	9,89,045 37

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
			(ख) सहायक-अनुदान:		
2. सिगरेट, तम्बाकू अनुसंधान उप-केन्द्र, गुंतूर	26,995.21		1 बीड़ी तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, आनंद	1,51,307 36	
3. सिगार और चीरुट तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, वेदसंदुर	21,918.88		2. बीड़ी तम्बाकू अनुसधान उप-केन्द्र, निपानी	16,295 00	
4. हुक्का तथा खाने के तम्बाकू का अनुसंधान केन्द्र, पूसा	13,832.29		3. जिला खेरा में तम्बाकू के चित्ती रोग पर नियंत्रण करने की योजना	5,366 70	
5. लपेटन (रैपर) तथा हुक्का तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, दीनहाता	26,627.09	1,23,490.51	4. उत्तर प्रदेश में देसी तम्बाकू के सुधार करने की योजना	12,899 00	
(ग) समिति द्वारा सहायता दी गई योजना प्राप्त प्राप्तियां :			5. महाराष्ट्र राज्य के विदर्भी क्षेत्र मे अनुसंधान की योजना	6,580.00	
1. बीड़ी तम्बाकू अनुसन्धान योजना, आनंद	11,219.04		6. उत्तर प्रदेश मे सिगरेट तम्बाकू के अन्वेषण केन्द्र की योजना	730.38	
2. बीज संवर्धन फार्म योजना, आनंद	8,195 93	19,414.97	7. राजेन्द्र नगर, हैदराबाद में सिगरेट-तम्बाकू के अन्वेषण केन्द्र की योजना	7,700.00	
(घ) फुटकर प्राप्तिया	2,533.90		8. उत्तर प्रदेश में नाटू तम्बाकू (एन० टैबाकम) की खेती और प्रचलन करने की योजना	8,320 00	2,09,198 44
(ङ) वचनबद्ध व्यय योजनाओं से प्राप्त प्राप्तियां :					
1. केन्द्रीय तम्बाकू अनुसधानशाला, राजामुन्द्री को सुगठित करने की योजना	17,077.18		3. तम्बाकू और इससे बने पदार्थों का विकास और सुधार:		
2. शुद्ध बीज और पौद का उत्पादन और वितरण :			1 बीज संवर्धन और तम्बाकू की साधारण फसले उगाने की योजना, आनंद	66,260.39	
(क) राजामुन्द्री	46,957.80		2. गुंतूर जिले में तम्बाकू विस्तार सेवा का प्रबन्ध करने की योजना	9,597.00	
(ख) वेदासंदुर	3,772.33				
(ग) पूसा	1,172.89				
(घ) दीनहाता	649.86		3. बिहार मे तम्बाकू उगाने वालों के खेतो पर फार्म बनाम किसानो के खेती संबंधी तरीको का तुल्नात्मक परीक्षण करने की योजना	6,354.75	
(ङ) आनंद	10,010.00				
(च) फीरोजपुर	5,859.30	85,499.36			
च. समिति के प्रकाशनों से प्राप्त प्राप्तियां :					
'इंडियन टूबेको', 'टूबेको बुलेटिन' आदि प्रकाशनों की बिक्री और इनमें छपे विज्ञापनों से प्राप्त प्राप्तियां :	18,703.41		4. मद्रास राज्य के नये क्षेत्रो में तम्बाकू का विकास करने की योजना	750.00	82,962 14
छ. बिना खर्च की गई रकम के शेष धन की वापसी (साधारण):			4. तम्बाकू के विपणन का सुधार :		
1. बीड़ी तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, निपानी	2,374.33		भागलपुर (बिहार राज्य) में समन्वेषी विपणन केन्द्र स्थापित करने की योजना		501.00

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
2. विपणन रिपार्ट के पुनर्विलोकन की योजना	7 01	2,381 37	5. विविध :		
			(1) इम्पीरियल टूबेको कम्पनी छात्रवृत्ति	4,355 31	
ज प्राप्त हुई जमा रकमें		212 50	(2) वापस की गई जमा	450.00	
1. भारतीय केन्द्रीय तम्बाकू समिति भविष्य (प्राविडेंट) निधि		2,47,145 00	(3) वापस की गई भविष्य निधि जमा	70,341.00	75,146 31
			6. वचनबद्ध व्यय योजनाएं :		
झ. तीसरी पचवर्षीय योजना की योजनाओं से मिली प्राप्तिया :			(क) केन्द्रीय तम्बाकू अनुसधानशाला, राजामुन्द्री को सुगठित करने की योजना	36,412.59	
1. तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, हंसुर	13,697 65		(ख) शुद्ध बीज और पौद के उत्पादन और वितरण की योजना.		
2. केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री में भंडारन संबंधी परीक्षणों की योजना	1,721.05		1. राजामुन्द्री	19,834.86	
			2 वेदासंदुर	5,173.13	
			3. पूसा	6,409.21	
			4. दीनहाता	4,908.35	
3. बीड़ी तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, आनंद को सुगठित करने की योजना पर बिना खर्च की गई धनराशि की वापसी	452.68	15,771.38	5. आनंद	9,290.95	
			6. फीरोजपुर	5,072.67	87,101.76
		47,54,884.18	7. तीसरी पचवर्षीय योजना की योजनाएं		
			(क) केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री मे तम्बाकू की विभिन्न किस्मों पर तकनीकी अनुसंधान की योजना	5,242 24	
			(ख) आनंद में बीडी तम्बाकू पर तकनीकी अनुसंधान की योजना	44,994 97	
			(ग) केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री में तम्बाकू की विभिन्न किस्मो के जनन संबंधी माल सूचियां तैयार करने की योजना	7,664 53	
			(घ) केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री को सुगठित करने की योजना	22,506 96	
			(ङ) तम्बाकू अनुसधान केन्द्र, हंसुर	61,910.71	
			(च) तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, हंसुर को सुगठित करने की योजना	4,897.25	
			(छ) तम्बाकू की खेती, व्यवसाय और सुखाने आदि के उन्नत तरीकों के विषय में प्रशिक्षण देने की योजना :		

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
पिछला जोड़		47,54,884.18	1. केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री	18,790 05	
			2. आनंद	12,625 93	
			(ज) भंडारन संबंधी परीक्षण करने की योजना :		
			1. केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री	5,590.05	
			2. आनंद	3,478 64	
			(झ) भंडारन संबंधी परीक्षणों को सुगठित करने की योजना :		
			1. केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री	613.64	
			2. आनंद	6,523.94	
			(ज) बीज और पौद की योजना को सुगठित करने की योजना :		
			1. केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री	917.81	
			2. वेदासंदुर	967.98	
			3. फीरोजपुर	2,000.00	
			4. आनंद	36,000.00	
			(ट) क्वार्टर-निर्माण योजना :		
			1. केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री	67,829.87	
			2. तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, हंसुर	50,360.00	
			(ठ) आनंद में बिना-रिहायशी इमारतों के निर्माण की योजना	22,000 00	
			(ड़) दीनहाता में किसानों के खेतों पर लपेटन (रैपर) तम्बाकू की खेती के विस्तार की योजना	8,710.06	
			(ण) पश्चिमी जर्मनी में परीक्षण के तौर पर बनाने के लिए उपयुक्त तम्बाकू उत्पादन की योजना (गुंटूर)	32,087.48	
			(त) गुजरात राज्य के खेरा जिले में एकड़ संख्या के अन्तर का मिलान करने की योजना	13,210.00	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
पिछला जोड़		47,54,884.18	(फ) हुक्का तम्बाकू अनुसंधान उप-केन्द्र, फीरोजपुर की योजना	14,468.00	
			(ब) मैसूर में सिगरेट-तम्बाकू के चूर्णी-फफूंद रोग की रोक-थाम संबंधी योजना	7,350.00	4,50,740.11
			8. रोकड़ और अन्य बाकी :		
			अ—(क) निवेश :		
			प्रत्यक्ष मूल्य के 3 प्रतिशत भारत सरकार ऋण, 1970—75	7,54,100.00	
			(ख) इस वर्ष खरीदे गए 2,25,000 रुपये के राष्ट्रीय रक्षा सर्टिफिकेट और इन सर्टिफिकेटों पर 1962-63 में जमा हुआ 26,100 रुपये के ब्याज (कुल जमा ब्याज 99,100 रुपये) सहित राष्ट्रीय बचत सर्टिफिकेट और राष्ट्रीय रक्षा सर्टिफिकेट (भविष्य निधि)	9,57,100.00	
			(ग) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, मद्रास में वैयक्तिक जमा खाता और पोस्ट ऑफिस बचत बैंक खाता, मयलापुर	4,95,123.00	
				22,06,323.91	
			आ—समंजनित होने वाली पेशगी :		
			(क) अनुसंधान केन्द्र :		
			1. केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधानशाला, राजामुन्द्री	35,013.20	
			2. सिगरेट तम्बाकू अनुसंधान उप-केन्द्र, गुंतूर	64,555.35	
			3. सिगार और चीरुट तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, वेदासंदुर	5,071.57	
			4. हुक्का और खाने के तम्बाकू का अनुसंधान केन्द्र, पूसा	11,720.47	
			5. लपेटन (रैपर) और हुक्का तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, दीनहाता	33,445.74	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
पिछला जोड़		47,54,884.18	6. तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, हंसुर	45,474.43	
			(ख) अन्य पेशगियां	88,717.44	
				2,83,998.20	
			इ.—अग्रदाय		
			1. सचिव, भारतीय केन्द्रीय तम्बाकू समिति	500.00	
			2. निदेशक, तम्बाकू अनुसंधान, केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधान-शाला, राजामुन्द्री	1,750.00	
			3. पौद प्रजनक, सिगरेट तम्बाकू अनुसंधान उप-केन्द्र, गुंटूर	1,100.00	
			4. कार्यभारी अधिकारी, सिगार और चीरुट तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, वेदासंदुर	1,000.00	
			5. कार्यभारी अधिकारी, हुक्का और खाने के तम्बाकू का अनुसंधान केन्द्र, पूसा	1,000.00	
			6. कार्यभारी अधिकारी लपेटन (रैपर) और हुक्का तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, दीनहाता	1,000.00	
			7. कार्यभारी अधिकारी, तम्बाकू अनुसंधान केन्द्र, हंसुर	1,000.00	
			8. सस्य-विज्ञानी तम्बाकू (फीरोजपुर)	20.00	
				7,370.00	
			31-3-1963 को कुल		24,97,692.11
योग :		47,54,884.18	इतिशेष योग :		47,54,884.18

(ह०) के० सी० चेट्टी, सचिव

मैंने भारतीय केन्द्रीय तम्बाकू समिति के उपरोक्त लेखों की जाच की है । इस संबंध में मुझे जिस सूचना या व्याख्या की आवश्यकता पड़ी, वह सब मुझे प्राप्त हुई । संलग्न लेखा-जाच रिपोर्ट में व्यक्त विचारों को ध्यान में रखते हुए तथा मेरे द्वारा की गई लेखा जांच के आधार पर, मैं प्रमाणित करता हूं कि मेरी राय में ये लेखे विधिवत् रूप से रखे गए है और समिति की गतिविधियों का सच्चा व साफ रूप प्रदर्शित करते है । मेरा यह वक्तव्य मुझे दी गई सूचना तथा व्याख्या और समिति की लेखा-पुस्तको पर आधारित है ।

(हस्ताक्षर) हुसैन आगा, महालेखाकार

जे० एस० उप्पल, अवर सचिव

परिवहन मंत्रालय

(परिवहन पक्ष)

संस्ताव

नई दिल्ली, दिनाक 26 फरवरी 1965

स० 30-टी (4)/63—श्री आर० एन० राय, परिवहन आयुक्त, बिहार, 11 सितम्बर, 1964 से श्री एस० क्यू० रिज़वी के स्थान पर मोटर गाडी कराधान पर अध्ययन दल के सदस्य नियुक्त हुए है, जिसे इस मन्त्रालय की सस्ताव संख्या 30-टी (4)/63 दिनाक 8 जुलाई, 1964 के द्वारा पुर्नगटित किया गया था।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस सस्ताव की एक प्रतिलिपि सब सबधितो को भेज दी जाये और सामान्य सूचना के लिये इसे भारत के राजपत्र मे प्रकाशित कर दिया जाये।

ए० एम० भटनागर, उप सचिव

सिंचाई व बिजली मंत्रालय

संकल्प

नई दिल्ली, दिनाक 2 मार्च 1965

स० ई० एल० 2-35(1)/65—दिल्ली मे बिजली के सम्भरण में खराबियों को कम करने के लिए दिल्ली पारेषण तथा वितरण प्रणाली मे सुधार के प्रश्न पर हाल के वर्षों मे काफी ध्यान दिया गया है। जब कि इस मामले मे काफी सुधार हो चुके है फिर भी यह अनुभव किया गया है कि इसमे अभी भी अधिक विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है ताकि और सुधार के लिए सुझाव दिए जाए। इसलिए, समस्त प्रश्न पर विचार करने के लिए एक समिति स्थापित करने का फैसला किया गया जिसमे निम्नलिखित सदस्य होगे —

अध्यक्ष

(1) श्री के० एल० विज, सदस्य,
केन्द्रीय जल तथा विद्युत् आयोग।

सदस्य

(2) श्री जे० आर० हान्डा, मुख्य इंजीनियर,
दिल्ली बिजली सम्भरण उपक्रम।

(3) श्री एच० आर० भाटिया, प्रिंसिपल
थापर इजीनियरी इन्स्टीट्यूट, पटियाला।

(4) श्री के० मट्टन, किल्लिक उद्योग, बम्बई।

सचिव

(5) श्री एन० एम० वसत, सचिव
दिल्ली ताप परियोजना नियन्त्रण बोर्ड

2 समिति के विचारार्थ विषय निम्नलिखित होगे .—

(1) 1964 मे दिल्ली मे बिजली सम्भरण मे खराबिया का पुर्नविलोकन करना,

(2) भविष्य मे ऐसी खराबिया न हो, इसके लिए उपाय सुझाना, और

(3) इस समय रख-रखाव कार्य मे लगे हुए स्टाफ की पर्याप्तता की जाच करना तथा सुधार के लिए सुझाव यदि कोई हो, तो देना।

यह समिति, दिल्ली बिजली सम्भरण उपक्रम और नई दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी दोनो की वितरण प्रणालियो की जाच करेगी।

3. समिति की रिपोर्ट, भारत सरकार, सिचाई व बिजली मत्रालय को इस सकल्प के जारी होने के तीन महीने के भीतर प्रस्तुत की जाएगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि उपर्युक्त सकल्प का दिल्ली नगर निगम, दिल्ली बिजली सम्भरण उपक्रम, नई दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी, भारत सरकार के सभी मत्रालयो, प्रधान मत्री के सचिवालय, कैबनेट सचिवालय, राष्ट्रपति के सचिव, योजना आयोग, भारत के नियत्रक तथा महालेखा परीक्षक और दिल्ली प्रशासन को भेज दिया जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह सकल्प भारत के राजपत्र मे प्रकाशित कर दिया जाए।

संकल्प

दिनाक 3 मार्च 1965

स० ई० एल० 2-3(1)/64—सिचाई व बिजली मन्त्रालय ने सकल्प स० ई० एल० 2-3(1)/64, दिनाकित 24 अप्रैल, 1964 के अधीन एक समिति स्थापित की थी। इस समिति के सयोजक मद्रास के उद्योग मन्त्री श्री आर० वेंकटरमन थे। इस समिति के विचारार्थ विषय निम्नलिखित थे :—

(क) विविध राज्य बिजली बोर्डों के राजस्व तथा बिजली कर से प्राप्त आमदनी को बढ़ाने के तरीको की सिफारिश करना, और

(ख) टैरेफ और बिजली कर के बीच सम्बन्ध पद्धति की सिफारिश करना।

समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है और अन्य बातो के साथ-साथ निम्नलिखित सिफारिशे की है—

(1) सभी राज्य बिजली बोर्डों का सर्व प्रथम उद्देश्य यह होना चाहिये कि वे इतना अधिक राजस्व कमाने का लक्ष्य रखे जो चालन और रखरखाव के खर्च, सामान्य तथा मूल्यह्रास, आरक्षित निधि के अशदान और ऋण पूजी के सूद को पूरा करने के लिये पर्याप्त हो उन बोर्डों को इस उद्देश्य को पूरा नही कर पाए, चाहिए कि वे तीन से पाच साला की अवधि मे इस उद्देश्य की पूर्ति का लक्ष्य रखे।

(2) (क) बोर्डों का दूसरा उद्देश्य यह होना चाहिये कि वे प्रथम उद्देश्य मे बताए गए खर्चों को पूरा करने के पश्चात् कुछ राजस्व बचाने का लक्ष्य रखे और यह बचत पूजी पर 3 प्रतिशत वास्तविक लाभ के बराबर हो। समिति के कथनानुसार, चालन तथा रखरखाव के खर्च को और मूल्यह्रास को पूरा करने के पश्चात् राज्य सरकार द्वारा लगाए गए बिजली कर का हिसाब लगा कर, यह राजस्व पूजी पर 11 प्रतिशत लाभ के बराबर होगा अर्थात् सूद दर 6 प्रतिशत, वास्तविक लाभ 3 प्रतिशत, सामान्य आरक्षित निधि आधा प्रतिशत और बिजली कर डेढ़ प्रतिशत।

(ख) जिन बोर्डों ने प्रथम उद्देश्य को पूरा कर लिया है, उनको चाहिये कि वे शीघ्र ही दूसरे उद्देश्य की पूर्ति के लिये कार्रवाई आरम्भ कर दे और दूसरे बोर्डों का यह लक्ष्य होना चाहिये कि वे अपने प्रथम उद्देश्य को पूरा करने के पश्चात् तीन से पाच वर्षों के भीतर दूसरे उद्देश्य को पूरा कर दे।

2 भारत सरकार ने उपर्युक्त सिफारिशो पर ध्यानपूर्वक विचार किया है। क्यो कि बिजली सम्भरण उद्योग मे काफी पूजी लगी है और इन पूजियो पर अधिकाधिक लाभ आवश्यक है, भारत सरकार का विचार है कि समिति द्वारा सुझाए गए लाभ दरो को न्यूनतम समझ इन की प्राप्ति की जाए तथा

अधिक लाभ प्राप्ति के लिये सभी प्रयास किये जाए । यह भी आवश्यक है कि उद्योग में नई पूंजी लगाने के संसाधनों को बढ़ाने की खातिर इन पूंजियों से शीघ्र लाभ प्राप्त किया जाए। भारत सरकार का विचार है कि समिति द्वारा सुझाए गए उद्देश्य की पूर्त्ति समिति द्वारा सुझाई अवधि से कम अवधि में करना सम्भव होना चाहिये और इसकी पूर्त्ति के लिये सभी प्रयास करने चाहियें ।

3 समिति की दूसरी सिफारिशों पर विचार हो रहा है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए और इस की एक एक प्रति उन सभी को, जो इससे सम्बन्ध रखते हैं, भेज दी जाए ।

वि० नंजप्पा, सचिव

श्रम और रोजगार मंत्रालय

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 22 फरवरी 1965

सं० *W.B.*-21(16)/64—भारत सरकार ने अपने संकल्प संख्या डब्ल्यू० बी०-21(4)/64, तारीख 13 नवम्बर 1964 द्वारा मुख्य पत्तनों पर काम करने वाले पत्तन और गोदी कामगरों के लिए एक केन्द्रीय मजदूरी बोर्ड गठित किया था । मजदूरी बोर्ड ने बढ़ी हुई दरों पर महंगाई भत्ता मंजूर करने के लिए सिफारिशें की हैं । ये सिफारिशें परिशिष्ट में दी गई हैं ।

2. भारत सरकार ने मजदूरी बोर्ड की सिफारिशों को स्वीकार करने और संबंधित नियोजकों से उन्हें यथाशीघ्र लागू करने के लिए अनुरोध करने का निश्चय कर लिया है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति संबंधित व्यक्तिओं को भेजी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आप सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

पी० एम० मेनन, सचिव

परिशिष्ट

पत्तन और गोदी कामगरों के लिए केन्द्रीय मजदूरी बोर्ड

इस मामले के सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद बोर्ड का मत है कि किसी भी पक्ष (नियोजक या कर्मचारी) के तर्क की तरफदारी के बिना, पत्तन और गोदी कामगरों को पहले की तरह दास आयोग की सिफारिशों के अनुसार बढ़ा हुआ महंगाई भत्ता मिलना चाहिए ।

यह सिफारिश करते समय बोर्ड अंतरिम सहायता के प्रश्न पर कोई मत व्यक्त नहीं कर रहा है । अंतरिम सहायता के प्रश्न पर बोर्ड द्वारा सभी संबंधित तथ्यों पर, जिनमें कामगरों की कुल मजदूरी भी शामिल है, विचार करने के बाद फैसला किया जाएगा ।

ह०/- एल० पी० दवे
ह०/- डी० टी० लकदावाला
ह०/- आई० डी० दास गुप्त
ह०/- एस० सी० सेठ
ह०/- टी० के० नम्बियर
ह०/- एस० आर० कुलकरनी
ह०/- मक्खन चटर्जी
ह०/- मैत्रयी बोस

ह०/- एन० अहमद

बम्बई, 10 फरवरी 1965 ।

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 3 मार्च 1965

स० *WB*-3(26)/64—भारत सरकार ने अपने संकल्प संख्या WB-3(26)/64, तारीख 14 जनवरी, 1965 द्वारा कॉफी बागान उद्योग के क्षेत्र-कर्मचारियों और मेस्त्रियों के मजदूरी-विन्यास के सम्बन्ध में कॉफी बागान उद्योग के केन्द्रीय मजदूरी बोर्ड द्वारा की गई सिफारिशों की स्वीकृति की घोषणा कर दी । मजदूरी बोर्ड का विचार है कि सिफारिशों के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है और उसने उपर्युक्त सरकारी संकल्प के परिशिष्ट में प्रकाशित सिफारिशों के अन्त में निम्नलिखित को जोड़ने के लिए सरकार से प्रार्थना की है :—

"क्षेत्र-कर्मचारियों और मेस्त्रियों की 1-7-1965 से मजदूरी के बारे में बोर्ड की सिफारिशें बोर्ड की अन्तिम रिपोर्ट में शामिल की जायंगी ।"

2. मजदूरी बोर्ड द्वारा किए गए स्पष्टीकरण को ध्यान में रखते हुए सरकार ने अपने उपर्युक्त संकल्प में निम्नलिखित संशोधन करने का निर्णय किया है :—

(क) संकल्प के पैरा 1 के अन्तिम वाक्य अर्थात् "ये सिफारिशें 1 जुलाई, 1964 से लागू होंगी और 5 वर्ष तक लागू रहेंगी" में संशोधन करके वह इस प्रकार पढ़ा जायगा :—

"ये सिफारिशें 1 जुलाई, 1964 से लागू होंगी ।"

(ख) संकल्प के परिशिष्ट में उप-पैरा (2) के बाद, निम्नलिखित उप-पैरा जोड़ा जायगा, अर्थात्

"क्षेत्र-कर्मचारियों और मेस्त्रियों की 1-7-1965 से मजदूरी के बारे में बोर्ड की सिफारिशें बोर्ड की अन्तिम रिपोर्ट में शामिल की जायंगी ।"

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों को भेजी जाय ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

आर० एल० मेहता, अतिरिक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1965

No. 15-Pres./65.—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *Class I*, to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

Major General KARTAR NATH DUBEY (IC-6030), Engineers.

Brigadier SHAVAK NASWARANJI ANTIA (IC-2130), Signals.

Brigadier SYED BAQUAR RAZA (IC-806), Artillery.

Brigadier BADRI NATH UPADHYAY (IC-2958), 9 Gorkha Rifles.

No. 16-Pres./65.—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED ESRVICE MEDAL", *Class II*, to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional under :—

Brigadier BIKRAM PRAKASH WADHERA (IC-434), Engineers.

Brigadier TRICHINOPOLY VEDIVEL JEGANATHAN (IC-556) Engineers.

Brigadier KRISHAN CHAND SONI (IC-2053), Engineers.

Colonel SYDNEY ALEXANDER PINTO (IC-1038), Engineers.

Wing Commander HARDYAL SINGH DHILLON (3237), G.D.(P).

Squadron Leader KARAM SINGH (5132), Technical Engineering.

No. 17-*Pres.*/65.—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *Class III*, to the undermentioned personnel for distinguished service of a high order :—

Lieutenant Colonel TARLOCHAN SINGH (IC-973), Engineers.

Wing Commander KHARBANDA JAI CHANDRA (3445), Technical Engineering.

Major MUNUSWAMY GOVINDA REDDY (IC-6350), Engineers (*Posthumous*).

Major KRISHAN NANDLAL BAKSHI (IC-9851), Engineers.

Major/RAM PAL SINGH (IC-2817), IDSM, 7 Guards.

Lieutenant Commander RANJIT KUMAR CHAUDHURI.

Flight Lieutenant JAGMOHAN SINGH VIRK (4437), G.D.(P).

Flight Lieutenant LAPISHWAR DUTT VASISHT (4500), G.D.(P).

JC-17509 Jemadar LACHMAN SINGH, Engineers.

13598 MWO HARBHAJAN SINGH RATTAN, Signaller (Air).

11346 MWO WINFRED SAMUEL, Fitter-I.

16943 WO KRISHNA VITTAL RAO (*Posthumous*).

No. 18-*Pres.*/65.—The President is pleased to approve the award of the "SENA MEDAL"/"ARMY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Major JAI SINGH (IC-8088),
The Assam Rifles.

In April 1964, Major Jai Singh was given the task of locating and raiding the hideout of a hostile leader. With 20 men, Major Jai Singh moved through very difficult terrain in inclement weather and located the hideout which was defended by about 200 hostiles. He boldly attacked the hideout with his small force and captured the lower half of it but was pinned down by intensive hostile fire from higher ground. The engagement continued during the night of the 13/14th April, and as his stock of ammunition was running low, Major Jai Singh led his men in a charge through the bullet-swept area and captured the rest of the hideout with some arms and ammunition.

In this action, Major Jai Singh displayed courage and leadership of a high order.

2. Major BALAKRISHNA RAMCHANDRA DOSS (IC-4553),
5/8 Gorkha Rifles.

Major Doss, commanding a Company, was given the task of destroying a very big hostile camp in an area difficult of access. On the night of 5/6th November 1963, when his Company was going through thick jungle, the leading platoon was suddenly fired upon by a hostile sentry. Realising that the hostile camp must be near at hand, Major Doss led his platoon forward rapidly in the wake of the retreating sentry. After about 200 yards, the platoon came under heavy fire from a well sited and concealed camp. Major Doss unhesitatingly charged the position with his leading platoon, killing five hostile and capturing twelve along with a large quantity of ammunition, explosives and equipment.

In this bold and daring action, Major Doss displayed courage, determination and leadership of a high order.

3. Major SHAMSHER SINGH (IC-6712),
The Dogra Regiment.

During February-March 1964, Major Shamsher Singh was in command of a mixed force, comprising one Company of a Dogra Battalion and one Company of Rajasthan Armed Constabulary, in an area near the Indo-Pakistan international border in Jammu and Kashmir. In order to prevent Pakistani intruders from forcibly encroaching into the area, Major Singh's force firmly established itself in very close proximity in extensive defensive positions which were under constant and close observation by the intruders.

On 5th March 1964, the intruders launched an unprovoked attack and subjected Major Singh's force to devastating fire, using not only grenades, rifles, Light Machine Guns, Medium Machine Guns, and mortars, but also 25 pounder guns. They also fired incendiary shells and tracers setting ablaze the undergrowth around our positions. Before the fire could however engulf our bunkers and ammunition dugouts, Major Singh, with great presence of mind and while under fire, cut a trench across the line of the approaching flames and thereby averted a major catastrophe. This engagement continued intermittently till the 11th March 1964. During the period, with very little respite, Major Singh moved from trench to trench under heavy fire and instilled great confidence into the men under his command, who, inspired by his brave leadership prevented the intruders from strengthening their hold in the area.

In this action, Major Shamsher Singh displayed courage, leadership and devotion to duty of a high order in the best traditions of the Indian Army.

4. Captain AMBAHADUR GURUNG (SI-696),
3/8 Gorkha Rifles.

Pakistani forces established a strong platoon locality at a spot within two hundred yards of the cease fire line in Jammu and Kashmir. This locality dominated a number of our posts and was a source of harassment to our patrols in that area. On 22nd September 1964, Captain Gurung was detailed with his Company to deal with the threatening situation. Despite the difficulties of the terrain, he chalked out a simple but very effective plan, achieving complete surprise, and silenced the hostile fire.

In this action, Captain Ambahadur Gurung displayed courage and leadership of a high order.

5. Captain KANWAR AJMER SINGH (IC-13195),
3 Jammu and Kashmir Rifles.

Captain Kanwar Ajmer Singh was commander of a patrol in Jammu and Kashmir which was fired on by an ambush party of Pakistani intruders on the night of 21st/22nd September 1964. A fierce hand to hand fight ensued during which Captain Ajmer Singh continued directing and encouraging his men to fight gallantly and to destroy the enemy. He took quick and timely action in sending a party to silence the hostile stop. Encouraged by his fighting spirit and inspiring leadership his men broke up the ambush successfully.

In this action, Captain Kanwar Ajmer Singh displayed courage and leadership of a high order.

6. Second Lieutenant PARSHOTAM KUMAR PRASHER (IC-15074),
The Corps of Engineers (*Posthumous*)

2/Lt. Prasher was engaged in the construction of a difficult and dangerous portion of the Gangtok-Natula road project. Disregarding the hazards, he continued with his work in snow rain and fog at high altitudes and always undertook the execution of the more dangerous tasks himself.

On 11th February 1964, three dangerously poised rocks were to be blasted for the cutting of road formation. 2/Lt. Prasher undertook the risk of blasting these rocks himself. He blasted the first two rocks successfully, but after blasting the third when he personally went forward to check the safety of the demolitions, the unstable rocks gave way suddenly and he was buried in the landslide and died on the spot.

2/Lt. Parshotam Kumar Prasher, a recently commissioned officer, showed courage, leadership and exemplary devotion to duty of the highest order.

7. JC-2195 Subedar Major ROSHAN,
9th Bn., The Dogra Regiment.

On 18th January 1964, at 1230 hours, a kerosene fire broke out owing to a defective oil heater in the quarter of Jemadar Madan Lal in Deir-el-balah (UAR). The room was made of wood and Jemadar Madan Lal was trapped inside the blazing heater blocking the only exit. The first officer to reach the scene was Subedar Major Roshan who rushed into the room, picked up the blazing heater, threw it otuside and carried Jemadar Madan Lal to safety, but was himself badly burnt on the face, hands and legs, and fell unconscious. His promtp action, however, saved the life of Jemadar Madan Lal and valuable property of the United Nations Emergency Force.

Subedar Major Roshan displayed exemplary courage, initiative and presence of mind.

8. 91006 Subedar HARKA BAHADUR LIMBU,
The Assam Rifles.

On the night of 13/14th April 1964, on orders from the column commander, Subedar Harka Bahadur Limbu, who was commanding a platoon of Assam Rifles, attacked and captured one half of a hostile hideout. The other half was located on high ground, from which the hostiles directed LMG and mortar fire on the platoon. The night was dark and was drizzling. The stock of ammunition was running low and the situation was very tense. Subedar Limbu with his men rushed across the bullet-swept area, charged the hideout and captured the remaining half. The hostiles ran leaving behind six killed, and some arms and ammunition.

In this action, Subedar Harka Bahadur Limbu displayed courage and leadership of a high order.

9. JC-6194 Subedar KARTAR SINGH,
The Dogra Regiment.

Subedar Kartar Singh was commanding a platoon of Dogras which, along with two other sections, was deployed in support of R.A.C. police posts near the Indo-Pakistan

international border in Jammu and Kashmir. In order effectively to engage Pakistani intruders, and to avoid detection of his position, Subedar Singh prepared several alternative positions, and interlinked them with deep communication trenches.

From 5th to 11th March 1964, the intruders kept up heavy fire on Subedar Kartar Singh's positions. Subedar Kartar Singh moved from position to position encouraging his men. Inspired by his example, his men brought down accurate fire on the intruders and silenced a number of their MMG and mortar positions.

Throughout the action, Subedar Kartar Singh displayed courage, devotion to duty and leadership in the best traditions of the Indian Army.

10. 9080042 Jemadar UJAGAR SINGH,
13 Jammu and Kashmir Militia.

Jemadar Ujagar Singh was Platoon Commander in charge of a post in Gurais Valley in Jammu and Kashmir. Pakistani intruders attacked the post on 22nd September 1964 and brought continuous and heavy mortar and Medium Machine Gun fire to bear on the post. Jemadar Singh inspired his men to fight back and by his courage enabled the platoon to repulse the attack with heavy losses to the intruders.

In this operation, Jemadar Ujagar Singh displayed courage and leadership of a high order.

11. 3131526 Battalion Havildar Major HAR NAND,
7th Bn. The Jat Regiment.

On 18th May 1964, Battalion Havildar Major Har Nand was second-in-command of platoon which had been ordered to clear a Pakistani position, 2,000 yards on the Indian side of the Cease Fire line in Jammu and Kashmir. This position was at a height of over 10,000 feet and its approach was over extremely rugged and hazardous terrain. Battalion Havildar Major Har Nand voluntarily took command of the leading section and at 0530 hours crawled to within fifty yards of the foremost bunker, taking position behind fallen log. A Pakistan intruder suddenly came out from the bunker and fired wildly at him. Battalion Havildar Major Har Nand returned the fire fatally wounding him. He then rushed forward, covered the door of the bunker, and ordered his section to move to the left He shot dead another Pakistani intruder who emerged from the bunker and was taking aim with his rifle. Yet another intruder ran out of the bunker and fled when he shot at him.

Inspired by his leadership, his men attacked the bunker throwing in grenades and killed an intruder who was firing from inside. Battalion Havildar Major Har Nand covered the exit and prevented reinforcements from reaching this bunker from the two other bunkers of the post. Having killed three intruders and wounded two, he then pushed his section forward but found that the intruders had abandoned the position.

In this action, Battalion Havildar Major Har Nand displayed courage, determination and leadership in the best traditions of the Army.

12 5729733 Havildar INDARSING THAPA,
The Gorkha Rifles.

On 5th November 1963, a Company of Gorkha Rifles was ordered to locate and destroy a camp sheltering 100 hostiles. Havildar Indarsing Thapa, commanding the leading platoon, moved his platoon swiftly so that a greater part of the march was covered in the hours of darkness. Havildar Thapa quickly searched the area and located the hostile camp about 200 yards ahead situated in a position that dominated the approach. Ordering a section to the right of the camp, Havildar Thapa himself with two other sections moved to a ridge on the left. The hostiles who were taken by surprise took positions and opened fire. One of Havildar Thapa's sections crawled forward and returned the fire, killing three hostiles and wounding two. Their quick and accurate fire unnerved the hostiles who abandoned their equipment and personal effects, and fled into the jungle. Havildar Thapa's platoon apprehended six hostiles and captured arms, ammunition and documents.

In this action, Havildar Indarsing Thapa displayed courage, and determination of a high order.

13. 1502534 Havildar GANPAT SHINDE,
The Corps of Engineers.

Havildar Ganpat Shinde was sub-Sector Commander engaged in the construction of a part of the road from Towang to Bomdila. On 12th October 1961, while working with some local labourers in a rocky area, he noticed some rocks breaking away from the rock face and apprehending a landslide ordered the labourers to run. One of them however slipped and fell with a few small rocks coming down on top of him. Havildar Shinde promptly rushed to his rescue, extricated him and carried him to safety only a moment before a major landslide occurred.

In this action, Havildar Ganpat Shinde displayed courage and devotion to duty of a high order.

14. 13713188 Havildar DAL BAHADUR,
3 Jammu and Kashmir Rifles.

In September 1964, one of our patrols in Jammu and Kashmir was ambushed by Pakistani intruders and fired upon from three directions. To extricate the patrol it was essential to neutralize at least one of these positions. Havildar Dal Bahadur with four others was ordered to engage one of them to cover the patrol's withdrawal. With his men, he assaulted the position and killed a number of intruders using grenades and kukris. When his Bren gunner was wounded, he himself took the Bren Gun and continued to fire on the position. He thus neutralised the position and made it possible for the patrol to extricate itself.

In this operation, Havildar Dal Bahadur displayed devotion to duty and courage of a high order.

15. 5734738 Lance Havildar KULPRASHAD GURUNG,
3/8 Gorkha Rifles.

On 22nd September 1964, a Pakistani bunker was threatening one of our positions in Jammu & Kashmir. This bunker, which had a Light Machine Gun in it, was located on dominating ground, and any attempt to approach it was fraught with grave risk. L/Havildar Kulprashad Gurung, crept forward, hurled a grenade, and then ran into the hostile bunker and dragged out the Light Machine Gun by the barrel. He killed a Pakistani who tried to stop him with a Kukri.

In this action, L/Havildar Kulprashad Gurung displayed commendable courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

16. 2435605 Naik BACHITTAR SINGH,
The Punjab Regiment (*Posthumous*).

Naik Bachittar Singh was working with a medical platoon of the Punjab Regiment in NEFA, when on 25th September 1962, the Chinese started intensive shelling on one of our positions. An NCO received serious injuries and though the hail of bullets made any forward movement almost impossible, Naik Bachittar Singh crawled out into the open, dressed the NCO's wounds and with cool courage and determination lifted him back to safety. He was last seen on 21st October 1962 attending to a casualty near Nathungla during the withdrawal of one of our posts.

Throughout these engagements Naik Bachittar Singh displayed gallantry and devotion to duty in the best traditions of the India Army.

17. 1506750 Lance Naik IQBAL SINGH,
The Corps of Engineers (*Posthumous*).

Lance Naik Iqbal Singh was in charge of a blasting party on road construction work in NEFA. His sector passed through thick jungle and was infested with leeches. In addition, there was shortage of accommodation, clothing and at times even food.

On 4th May 1961, rain caused a big landslide in his sector holding up a convoy of supplies. The labourers feared that more landslides might take place and were reluctant to work. Since it was essential to clear road, Naik Iqbal Singh led the labourers personally and cleared most of the landslide. As he prepared a charge to clear the last bit, and went forward alone to ignite it, a huge rock came hurtling down and swept him into the valley. He was taken to the nearest hospital but succumbed to his injuries.

In this action, L/Nk Iqbal Singh displayed exemplary courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

18. 2544334 Lance Naik PONNU PILLAI NADAR,
The Madras Regiment.

L/Naik Nadar was leading section commander of a platoon entrusted with the task of locating and destroying a notorious hostile camp on the Nagaland/Manipur border. After marching for two days in heavy rain through dense jungle over difficult ground, the section reached the hostile camp and was greeted with fire at point blank range. L/Naik Nadar rushed forward with a bren gun and charged the hideout, killing three hostiles and capturing some arms, ammunition and valuable documents.

L/Naik Ponnu Pillai Nadar displayed cool courage, initiative and devotion of a high order.

19. 47395 Rifleman HARKA BAHADUR RAI,
The Assam Rifles.

A platoon patrol of Assam Rifles was sent to a village on the Manipur-Nagaland border to intercept some hostiles. After a long and strenuous march in pitch darkness, when the patrol approached a hut, a hostile sentry opened fire at point blank range. Rifleman Harka Bahadur Rai attacked the sentry, snatched his loaded rifle and killed another hostile who was taking aim at a member of his section His Section killed four hostiles and captured some arms and ammunition and valuable documents.

Rifleman Harka Bahadur Rai displayed courage and devotion to duty of a high order.

20. 5740093 Rifleman TOPBAHADUR RANA,
The Gorkha Rifles.

On 5th November, 1963, a Company of Gorkha Rifles was ordered to locate and destroy a camp sheltering 100 hostiles When the Company approached the camp area after a night long march, there was an exchange of fire. Leading scout Rifleman Topbahadur Rana, his Section Commander and another rifleman chased a group of hostiles for about half a mile, when suddenly they were fired upon from high ground across a nullah. Under cover of this fire, five hostiles were attempting to climb up the side of the nullah. Rifleman Rana dashed forward through intensive fire and charged and killed two of these hostiles with his *kukri*. This daring action unnerved the hostiles who were giving covering fire and they fled. Rifleman Rana's brave action saved the lives of his Section Commander and the second Rifleman.

In this action, Rifleman Topbahadur Rana displayed courage and determination of a high order.

21 9093390 Sepoy AMIR HAMZA SHAH,
13 J&K Militia *(Posthumous)*

Sepoy Amir Hamza Shah was bren gunner of his Section at a post in Gurais Valley in Jammu & Kashmir. On 22nd September, 1964, during a heavy attack by Pakistani intruders, Sepoy Shah continued firing his bren gun and when it developed trouble and stopped firing, with great presence of mind soon got it going again. He was hit by ahostile bullet, but continued to fire till he was hit again and killed. His gallant action saved his post despite the heavy hostile fire.

Sepoy Amir Hamba Shah displayed great courage determination and devotion to duty.

No 19-*Pres*/65.—The President is pleased to approve the award of the "NAO SENA MEDAL"/"NAVY MEDAL" to the undermetioned personnel for exceptional devotion to duty and courage :—

1. Commander CREIGHTON MALCOLM REILLY.

In April, 1964, the Navy was assigned the task of taking a small motor vessel from Bombay and delivering it at Port Blair The vessel was designed for inland water transport and was unsuitable for the sea even in calm weather. The navigation aids were outmoded; and the vessel was not equipped even with the basic facilities for a long sea voyage To sail her from Bombay to the Andamans in April and May during the advance of the monsoon was therefore hazardous

Commander Reilly volunteered for the task, and sailed from Bombay with a crew of 3 officers and 25 men. Throughout the voyage, the crew were engaged in a grim struggle against bad weather, rough sea and mechanical breakdowns The tiny vessel was often in danger of capsizing, and was once forced to return to harbour for repairs. At one time conditions were so bad that it was proposed to transfer the crew to a bigger ship and to tow the vessel unmanned Commander Reilly declined the offer, proceeded with the vessel, and ultimately brought her safely to her destination

Commander Reilly displayed commendable courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy

2 Lieutenant RAJENDRA SINGH GREWAL,
INS Vikrant.

Lieutenant Grewal was pilot of an Alize aircraft which took off from INS Vikrant at 1930 hours on 24th February 1964, when the carrier was about 60 miles southwest of Colombo Immediately after take off, the electrical system of the aircraft failed with the result that there was no cockpit lighting or horizon indication. Lieutenant Grewal was unable to read any instrument, or to contact the carrier or any air station With skilful airmanship he navigated the aircraft and arrived over an airfield in Ceylon, making a safe landing without any indication from the ground and without any landing lights. Since he suspected the presence of another aircraft on the runway, he used heavy braking which caused all the 4 tyres to burst Despite this he kept the aircraft under control and brought it to a safe halt. But for Lieutenant Grewal's courage and skill, the aircraft might have been lost with all its crew.

Lieutenant Rajendra Singh Grewal displayed coolness and courage in keeping with the highest traditions of the Indian Navy.

3. Sub-Lieutenant (SD)(TAS) NARAYANAN SREEDHARAN NAIR

In December 1963, on an urgent request from the Hirakud Dam authorities, a Diving Team under the command of Sub-Lieutenant Nair was sent to Chipplima Power House It was required to seal the draft tube gates, to dewater the turbine well, and to replace a defective turbine unit. The task was made more difficult owing to a strong current and whirlpool action of the water. Under normal circumstances it would have been undertaken only after shutting down the Power House completely. Despite the extremely hazardous and difficult conditions, Sub-Lieutenant Nair took a bold decision to carry out the diving operations with the help of a guideline streamed from the gate end. Under his supervision the turbine well was dewatered and the defective turbine unit replaced.

In January 1964, the Tungabhadra Dam authorities asked for assistance of divers in connection with the commissioning of an additional turbine unit at the Power House. Sub-Lieutenant Narayanan Sreedharan Nair carried out extensive diving operations for opening the penstock and draft tube gates, and inspecting the underwater guide rails of the penstock gate down to a depth of 95 feet, and completed the task in good time

On another occasion, he conducted underwater cutting and welding operations for the removal of the dummy gate of the irrigation canal, and rectifying defects in the penstock gate rails at Tungabhadra Dam. He took a calculated risk in carrying out the diving in a gas mask, and removing the gate under unfavourable weather conditions.

Throughout, Sub-Lieutenant Narayanan Sreedharan Nair displayed courage, leadership, and devotion to duty which are in the best traditions of the Indian Navy.

4 Chief Petty Officer (GI) RAM NATH,
(O. No 39908).

On 3rd March, 1964, the No. 1 Combat Platoon of the Naval Garrison was deployed for reconnaissance of some of the smaller islands of the Andaman and Nicobar group. At 1930 hrs the Headquarters of the Platoon received SOS signals from one of its sections. Chief Petty Officer Ram Nath was asked to requisition a local boat and rush to the scene. On arrival he found that a group of sailors had been marooned in a marshy area in waist deep water and were unable to extricate themselves. It was pitch dark, the tide was rising fast and the marooned men were in imminent danger of being drowned Cpo Ram Nath took out the small boat and rescued eight of the marooned men. In the process the boat capsized twice, but on each occasion he set the boat right, baled out the water and resumed the rescue operation As the boat was very small and could take only two persons, he had the rest hanging to its side and with great skill succeeded in pulling the boat to safety Meanwhile the main rescue party arrived and the remaining personnel were also brought back to safety.

Chief Petty Officer Ram Nath displayed courage and devotion to duty which are in the best traditions of the Indian Navy.

5. Leading Seaman HARISH SINGH BISHT,
(O. No. 46991).

In December, 1963, on an urgent request from the Hirakud Dam authorities, a diving team was sent to Chipplima power house. It was required to seal the draft tube gates, to dewater the turbine well and to replace a defective turbine unit The work was initially started by the dam authorities, but they could not dewater the turbine well because the gates were positioned about 30 feet inside a tunnel, and there was a strong current and whirlpool action of the water. In normal circumstances, this job would have been undertaken only after shutting down the power house completely. Leading Seaman Bisht volunteered for the task and reached and sealed the gates by crawling with the help of a guide rope

Again as a member of a team sent to Tungabhadra dam, he carried out diving for underwater inspecttion of guide rails and opening of penstock and draft tube gates at a depth of 95 feet. He was also sent to Koyna dam for underwater inspection and removal of obstructions

In May-June 1964, as a member of a diving team deputed to carry out underwater cutting and welding operations for removing dummy gates of an irrigation canal and to rectify the defects of penstock gate guide rails at Tungabhadra dam, Leading Seaman Bisht carried out diving in a gas mask in adverse wheather conditions and removed a gate by cutting its securing bolts.

Throughout, Leading Seaman Harish Singh Bisht displayed courage, determination and resourcefulness which are in the best traditions of the Indian Navy.

6 Able Seaman SUNIL KUMAR CHATTERJEE,
(O. No. 45227) Diver 2

In August 1964, the Gujarat Electricity Board requested assistance of a Naval Diving team to remove a number of sheet piles which were obstructing free flow of water into the intakes of a Thermal Power Station near Baroda. The task involved cutting a number of underwater sheet piles using an oxygen are underwater cutter. Diving had to be carried out in tidal water and owing to the urgency of the task, much of the work had to be executed in darkness when tidal conditions were favourable.

Able Seaman Diver Chatterjee volunteered for the task He worked round the clock, and though he often suffered electric shocks from the underwater cutter, he continued with his task with firm determination. Visibility conditions were often so poor that it was difficult for him to see the cutting flame of the torch.

Despite all difficulties, Able Seaman Diver Sunil Kumar Chatterjee completed this task quickly and the operational capacity of the Power Station was fully restored

Able Seaman Diver Sunil Kumar Chatterjee displayed courage and devotion to duty of a high order.

7. AB (UC-3) GAJANAN BHIKAJEE ABHYANKAR, (O. No. 49267).

On 27th February, 1964, at about 1600 hours, an advance reconnaissance party landed on the Casurina Bay, Great Nicobar Island, from INS Akshay with the help of an assault boat. When the party returned to the place of landing on completion of its work it found that heavy surf and breakers had set on the beach. The made three attempts to get away, but every time the boat capsized and the men were washed to the beach. When they did not return by the time darkness set in, INS Akshay sent a boat party to rescue the stranded men The rescue boat had to anchor at a distance from the beach clear of breakers and swell. Disregarding the shark-infested waters, surf and breakers, able Seaman Abhayankar swam to the rescue boat and along with a member of the rescue party returned with a line to the spot where the stranded men were waiting. A link with the rescue boat established, all personnel, equipment and the assault boat were pulled clear of the breakers to safety.

This young sailor swam from the beach to the rescue boat and back more than once and carried out rescue operations without any respite until the entire reconnaissance party was brought to safety.

Able Seaman Gajanan Bhikajee Abhyankar displayed courage, endurance and devotion to duty which are in the best traditions of the Indian Navy.

No. 20-Pres./65.—The President is pleased to approve the award of the "VAYU SENA MEDAL"/"AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Wing Commander BHOPINDRA SINGH (3025), G.D.(P).

Wing Commander Bhopindra Singh, an experienced test pilot, is now in command of a Jet Fighter Squadron. He was entrusted with the complicated and exacting task of high-altitude trials on the Gnat aircraft. The task was hazardous in the absence of suitable data on which the behaviour of the aircraft could be pre-assessed at high altitudes. Despite this handicap, Wing Commander Singh, with courage and professional skill, carried out the trials from one of the highest airfields located in treacherous mountainous terrain. The data collected as a result of the trials will have far reaching effect on the concept and future conduct of Fighter operations in the western sector. The operation of a Jet Fighter from an airfield at a high altitude in Ladakh is a land-mark in the history of the Indian Air Force.

Wing Commander Bhopindra Singh displayed courage and a high degree of professional skill in the best traditions of the Air Force.

2. Squadron Leader ASHATEETA CHAKRAVARTI (3662), G.D.(P).

Squadron Leader Chakravarti has been engaged in transport support operations in Jammu and Kashmir area since August 1961. He has flown a total of about 6018 hours including about 1023 hours on operations. He has been associated with trial landings on a number of advance landing grounds, and was the first to land at one of the highest airfields in the world. With his intimate knowledge of the difficult terrain, he has imparted flying instructions to a number of junior pilots in forward areas.

Throughout the operational flights, Squadron Leader Ashateeta Chakravarti displayed courage, professional skill and devotion to duty of a high order.

3. Squadron Leader GURDIP SINGH (3944), G.D.(P).

Squadron Leader Gurdip Singh is Flight Commander of a Transport Unit in Ladakh. After the declaration of emergency, in addition to his administrative responsibilities, he undertook a large number of hazardous sorties personally, before entrusting them to the pilots under his command. So far he has done over 4000 hours of flying, of which about 1200 hours were flown in forward areas. He has also carried out several supply missions on advance landing grounds.

Squadron Leader Gurdip Singh was among the experienced pilots who airlifted tanks to Chushul and Leh in 1962-63. Recently, when an aircraft was held up at Leh due to some engine trouble, he retrieved it from that area. He also acted as the Training Officer of his squadron and achieved remarkable success.

Throughout, Squadron Leader Gurdip Singh displayed a high standard of professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

4. Squadron Leader KRISHNASWAMY SUBRAMANIAN (4213), G.D.(N).

Squadron Leader Subramanian is a Navigation leader of a Heavy Transport Squadron. He has a total of 4650 hours of flying, of which about 1143 hours have been on operational flights during the emergency. He trained junior navigators and vounteered for most of the hazardous sorties.

On 2nd June 1962, while Squadron Leader Subramanian was on a supply-dropping mission, a parachute developed inside the aircraft and it became difficult to maintain height. Coolly, he operated the transporters on emergency, and the whole load was ejected without any loss of time. The aircraft was then able to climb normally.

In October 1962, his aircraft came under heavy ground fire from the Chinese. Undaunted he maintained his position and kept on relaying vital information to higher authorities, which proved to be of great value to the Commanders.

Throughout, Squadron Leader Krishnaswamy Subramanian displayed great devotion to duty, courage and professional skill which are in the best traditions of the Indian Air Force.

5. Squadron Leader RATHINDRA KUMAR BASU (3968), G.D.(P).

Squadron Leader Basu has been a Flight Commander of a Heavy Transport Squadron in the Jammu and Kashmir area since April 1961. He has carried out a total of about 4,900 hours of flying, of which over 1400 hours have been on operational flights. He has also carried out more than 300 operational supply missions and has to his credit 200 landings on advance landing grounds like Leh and Chushul.

Squadron Leader Basu was entrusted with the task of training and familiarising the new pilots of his unit with operations in the forward areas, and with perseverance and high professional skill successfully completed it. He is always eager to lead the most difficult and vital missions, and thus sets a fine example to his subordinates.

Squadron Leader Rathindra Kumar Basu displayed courage, leadership and devotion to duty of a high order.

6. Flight Lieutenant PURUSHOTTAM LAXMIKANT PUROHIT (4581), G.D.(P).

Flight Lieutenant Purohit has been engaged in air transport support operations in Jammu and Kashmir since 1957. He has done about 1000 hours of operational flying over this area.

In April 1962, when his Squadron was moved out from this area Flight Lieutenant Purohit volunteered for transfer to the incoming Squadron so as to extend to it the benefit of the experience gained by him. During his operational tour, he flew 160 missions carrying heavy loads to forward areas. He was always a source of inspiration to other aircrew.

Throughout, Flight Lieutenant Purushottam Laxmikant Purohit displayed courage, initiative and devotion to duty of a high order.

7. Flight Lieutenant AMAR JIT SINGH SANDHU (4705), G.D.(P).

On 10th March 1964, Flight Lieutenant Sandhu, while in a formation of Gnat aircraft, experienced a flame-out of engine followed by a total electrical failure rendering the tailplane inoperative. He was faced with the choice of either abandoning the aircraft and ejecting himself, or carrying out a "dead-stick" forced-landing. Inspite of the failure of vital services, he chose the latter in order to save a valuable aircraft from destruction.

This was the first time that a "dead-stick" landing was carried out in Gnat aircraft. Flight Lieutenant Sandhu also made it possible for the technical staff to ascertain the defect leading to the flame-out of the engine which, if undetected, might have caused serious accidents in future.

Flight-Lieutenant Amar Jit Singh Sandhu displayed courage, high professional skill, and devotion to duty which are in the best traditions of the Indian Air Force.

8. Flight Lieutenant TREVOR KEELOR (4818), G.D.(P).

On 5th February 1964, Flight Lieutenant Keelor was detailed to ferry a Gnat from Poona to Palam in a formation of five aircraft. The last part of the flight had to be undertaken at a height of about 41,000 feet.

While descending to land at Palam, he discovered, at a height of about 15,000 feet, that there was no response from the engine to throttle movements. After informing the leader, Flight Lieutenant Keeler immediately broke off from the formation and attempted a landing at Palam, knowing fully well that previous attempts to force-land a Gnat had resulted in fatal or serious injury to the pilot. With great presence of mind and careful handling, he accomplished the forced-landing successfully without any damage to the aircraft.

Flight Lieutenant Trevor Keelor displayed courage, presence of mind and a high standard of professional skill in the best traditions of the Indian Air Force.

9. Squadron Leader BHAGAT SINGH KALRA (4492), G.D.(P).

Squadron Leader Bhagat Singh Kalra was in command of a Helicopter detachment in NEFA during October-November 1962, and flew 300 operational sorties during this short period.

On 21st October 1962, he averted a major disaster by making a quick and correct appreciation of a dangerous situation. Five helicopters were operating individually for conveying troops to a forward area. The GOC-in-C, Eastern Command was travelling in one of the helicopters. Enroute to the forward area, Flight Lieutenant Kalra was informed by the Captain of another aircraft that a large fire was raging in an Army post ahead. Noticing a great deal of unusual troop movement, he ordered all helicopters to return to base, and thus saved them as well as their occupants.

On 23rd October 1962, flying from dawn to dusk, Flight Lieutenant Kalra evacuated about 300 women and childern from Tawang. On another occasion, he rescued two Air Force officers who had to crash land after their helicopter had been shot down by the Chinese.

Throughout the operations Flight Lieutenant Bhagat Singh Kalra displayed a very high sense of duty and professional skill which are in the best traditions of the Indian Air Force.

10. Flight Lieutenant HILTON NOEL BYRNE (5046), G.D.(P).

Flight Lieutenant Byrne has been Flight Commander of a Helicopter Unit operating in NEFA since September 1962. He has flown more than 1000 hours in less than 2 years in this area and has made about 750 landings at helipads in difficult mountainous terrain. He has fulfilled different assignments including conveying of troops and equipment, trial landings at new helipads and screening junior pilots in difficult and unfamiliar terrain and in adverse weather conditions. He has also carried out trials and assessed the operational capability of MI-4 Helicopter. This included troops assault, supply dropping, carrying of external loads and deplaning troops by ropes etc.

Flight Lieutenant Hilton Noel Byrne has displayed courage, determination and a high degree of professional skill.

11. Flight Lieutenant MOHAN DHARAMDAS LALVANI (5658), G.D.(P).

Flight Lieutenant Lalvani has been working since 1961 as a Flight Comander with a Helicopter Squadron operating in Ladakh. He was a commendable record of about 1000 landings at helipads located in difficult mountainous areas. During the Chinese aggression on the northern borders in October-November 1962, he undertook a large number of difficult assignments. In addition to his duties as Flight Commander, he had to undertake training of junior pilots who were not conversant with the terrain and had no operational experience. He assisted the Squadron Commander in planning and executing the tasks allotted to his unit.

Throughout, Flight Lieutenant Mohan Dharamdas Lalvani displayed high professional skill, courage and devotion to duty.

12. Flight Lieutenant RAKESH TANDON (5391), G.D.(P).

As Flight Commander of a Helicopter Unit in NEFA, Flight Lieutenant Tandon has carried out over 900 landings in advance landing grounds/airfields and has flown over 1000 hours.

On 16th May 1964, a helicopter, while attempting to land at a helipad, got its front oleos bogged down on the ground as a result of which they got dangerously bent backwards. Realising the danger involved, the pilot abandoned the landing and flew back to the base. This information was passed on to Flight Lieutenant Tandon who was flying his own helicopter. He landed immediately, and proceeded to assess the damage on the helicopter which was instructed to hover low over the airfield. He organised a soft landing area by placing old tyres and barrels in such a manner as to give support to the aircraft when it landed. Thereupon, he instructed the hovering helicopter to lower the rope ladder by which he climbed into the damaged aircraft and took over control personally. He manoeuvred the helicopter and landed safely at the prepared spot thus saving the helicopter as well as its occupants.

Flight Lieutenant Rakesh Tandon displayed initiative and a high degree of professional skill in the best traditions of the Indian Air Force.

13. Flying Officer JAGBIR SINGH RAI (6507), G.D.(P).

Flying Officer Jagbir Singh Rai has been serving with a Logistic Support Squadron in NEFA. He has carried out nearly 600 operational sorties and has made nearly 500 landings in forward airfield/advance landing grounds.

On 29th February 1964, Flying Officer Rai was on an operational mission flying from Dinjan to Tuting in NEFA. When the aircraft came over a river valley surrounded by high mountains and snow-covered peaks, he heard a loud noise in the engine and experienced a sudden loss of power. Realising that there was no suitable area for a forced landing, Flying Officer Rai immediately turned back towards the nearest airfield at Pasighat. When he was about 10 miles from there, his engine caught fire, and thick smoke and oil covered the entire windscreen and obscured his view. Though nearly chocked by smoke he tried to control the fire. Ultimately the crash-landed in a small river bed, sustaining severe injuries to his legs and arms. He extricated himself from the wreckage, crawled to a pool of water nearby and stayed there till he was rescued.

Flying Officer Jagbir Singh Rai displayed courage and professional skill of a high order.

14 14491 Master Warrant Officer PUTHYADTH NANU, Signaller (Air).

Master Warrant Officer Puthyadth Nanu has been serving as Deputy Signals Leader with a Heavy Transport Squadron in Jammu and Kashmir area since 1961. Earlier, he did two tours in Jammu and Kashmir and four tours with the Squadron operating in NEFA and Naga Hills. After the declaration of emergency, he volunteered for most of the difficult sorties. He has flown a total of nearly 6400 hours including about 2600 on operations. By virtue of his operational experience and intimate knowledge of the terrain, he contributed a great deal in fulfilling the tasks allotted to his unit. In addition to assisting the Signals Leader in training junior signallers, he often rendered valuable advice to the Squadron Commander in planning and executing the operations. His personal example was a source of inspiration to other Signallers.

Master Warrant Officer Puthyadth Nanu has displayed courage, devotion to duty and a high standard of professional skill in keeping with the best traditions of the Indian Air Force.

15. 47007 Warrant Signaller KRISHNAGIRI VENUGOPAL KANNAN, Signaller (Air).

Warrant Signaller Kannan has been working with a Heavy Transport Squadron operating in Jammu and Kashmir area since 1961. He has done a total of over 3000 hours of flying, nearly half of it in forward areas.

On 15th September 1961, while landing at Chushul, the nose wheel of his aircraft sheared off. With commendable presence of mind he switched off the generators, alternators and the master battery switch in order to prevent electrical fire. He jumped out of the aircraft with a fire extinguisher and looked round for any hot point caused by friction. He stood by till the entire crew got out of the aircraft, and the ground crew took over charge.

On 4th March 1963, while on a supply-dropping mission in Ladakh one of the elevator cables snapped. Only part of the load could be dropped; the remainder was stuck on the transporter and this prevented the cargo doors from closing. Warrant Signaller Kannan immediately went to the rear of the aircraft to supervise the discharge of the cargo by the ejection crew. Since two of them were affected by lack of oxygen and had become unconscious, he himself got down to eject the load and close the cargo doors. Although exhausted, he carried the ejection crew to the pressurised cabin where oxygen was administered to them.

Throughout, Warrant Signaller Krishnagiri Venugopal Kannan displayed courage and devotion to duty of a high order.

16 47055 Warrant Officer CHACKO JOSEPH, Flight Gunner.

Warrant Officer Joseph has been serving with a Heavy Transport Squadron in Jammu and Kashmir area since 1961. So far he has flown a total of 3500 hours including nearly 1600 hours on operations in Ladakh area. In addition to his duties as a Gunnery leader, he successfully trained junior gunners and familiarised them with the operational role of the unit.

On 20th October 1962, while operating on the northern borders, Warrant Officer Joseph's aircraft came under heavy ground fire from the Chinese. With cool couraged and professional skill, he located the gun position on the ground and warned not only his Captain, but also other aircraft operating in the area at that time. This information was relayed to the authorities at base. His prompt action saved the other aircraft from possible damage.

Warrant Officer Chacko Joseph displayed a high degree of professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

K. R. DAMLE, Secy. to President.

PLANNING COMMISSION

RESOLUTION

New Delhi, the 26th February 1965

National Planning Council

No. F. 15/1/65-CDN.—Since its inception, the Planning Commission has, in the preparation of Five Year Plans and in the study of important problems, sought the help of economists, scientists and technical and other specialists, as well as persons with experience of social work. For availing of such assistance, the Commission has, from time to time, constituted Panels, Advisory Committees and study groups. With the growth of India's economy, problems of development have become increasingly complex and it is felt that, in addition to the existing arrangements for advice and consultation, it would be useful to have a small body of specialists

who would work in close and continuous association with the Planning Commission and its Members. With these considerations in view, the Government have decided to constitute a National Planning Council. The composition of the Council will be as follows :

Chairman

Deputy Chairman, Planning Commission

Members

Members, Planning Commission.

Shri H. R. Bhatia,
Principal, Thapar Institute of Engineering & Technology, Patiala.

Shri K. T. Chandy,
Director, Indian Institute of Management, Calcutta-50.

Prof. P. N. Dhar,
Director, Institute of Economic Growth, Delhi-6.

Shri M. Y. Ghorpade, M.L.A.,
Sandur, Bellary District,
Mysore.

Dr. M. S. Gore,
Director, Tata Institute of Social Sciences,
Chembur, Bombay-71 AS

Shri N. D. Gulhati,
140, Sunder Nagar,
New Delhi-11.

Dr. A. C. Joshi,
Vice-Chancellor, Panjab University,
Chandigarh.

Dr. D. S. Kothari,
Chairman, University Grants Commission,
New Delhi.

Shri T. S. Krishna,
Messrs T. V. Sundaram Iyengar & Sons (Pvt.) Ltd.,
P.B. No. 21, Madurai-1 (Madras State).

Shri S. Moolgaokar,
c/o Tata Industries (Pvt.) Ltd., Bombay House,
Bruce Street, Fort, Bombay-1.

Shri G. Pande,
Vice-Chancellor, University of Roorkee,
Roorkee (U.P.).

Dr. J. S. Patel,
Vice-Chancellor,
Jawaharlal Nehru Krishi Vishwa Vidyalaya,
Jabalpur (M.P.).

Dr. M. D. Parekh,
The National Rayon Corporation Ltd.,
P.B. No. 200, Bombay-1.

Dr. Vikram A. Sarabhai,
Professor, Physical Research Laboratory,
Ahmedabad.

Dr. S. R. Sen Gupta,
Director, Indian Institute of Technology,
Kharagpur

Prof. N. V. Sovani,
Gokhale Institute of Politics & Economics,
Poona-4.

Shri S. R. Vasavada,
c/o Textile Labour Association,
Gandhi Majoor Sevalaya,
Bhadra, Ahmedabad.

Joint Secretary, Plan Co-ordination, Planning Commission, will be the Secretary to the Council.

2. The Council will arrange studies by its members, individually or in committees, of such problems as may be suggested by the Planning Commission or by the members of the Council. The Committees may co-opt other specialists for study of any particular problem. The Council may also meet as a body from time to time to discuss the reports prepared by its members.

3. For the present, the term of the Council will be for a period of two years.

4. The Headquarters of the Council will be at Yojana Bhavan, New Delhi, but occasionally, meetings of the Council or its Committees may be held at any other place according to the convenience of the members.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all State Governments, all Chief Ministers of States, all Ministries and Departments of the Government of India, the Prime Minister's Secretariat, the Secretary to the President and Heads of all Indian Missions abroad.

ORDERED also that a copy be published in the Gazette of India.

T. P. SINGH, Secy.

RESOLUTION

New Delhi, the 4th March 1965

SUBJECT :—*Panel of Education—Reconstitution of—*

No. 1/4/62-Edu.—The Government of India is pleased to notify the nomination of Dr. C. D. Deshpande, Director of Education, Government of Maharashtra, Poona on the Panel on Education from the date of issue of this resolution.

2. Shri E. R. Dhongde, Director of Public Instruction, Government of Maharashtra, Poona, who was appointed as a member of the Panel on Education *vide* Planning Commission Resolution No. 1/4/62-Edu. dated the 25th May, 1964 cease to be a member of the Panel from 20th July, 1964.

ORDER

3. ORDERED that this Resolution be published in the Gazette of India.

4. ORDERED also that a copy of this Resolution be forwarded to all the members of the Panel on Education, all the State Governments, all the Ministries of the Government of India, the Cabinet Secretariat, the Department of Parliamentary Affairs, the Prime Minister's Secretariat.

D. K. MALHOTRA, Jt. Secy.

MINISTRY OF COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION

(Department of Co-operation)

New Delhi-1, the 24th February 1965

No. F. 3-6/64-CF.—In furtherance to para 5 of the Government of India's Resolution No. F.3-3/63-CF dated 17th October, 1963, reconstituting the National Cooperative Farming Advisory Board, the Government of India has decided to appoint the following persons as members of the Executive Committee of the Board :—

Chairman

Shri B. S. Murthy,
Deputy Minister,
Ministry of Community Development & Cooperation.

Members

1. Shri Mathura Das Mathur,
Minister for Cooperation,
Government of Rajasthan.
2. Shri Inder J. Malhotra, M.P.
3. Shri H. M. Patil,
Vishwanath Cooperative Farming Society,
Dhulia (Maharashtra).
4. Shri G. P. Jain,
Editor, Sevagram, Daryaganj,
Delhi-6.
5. Shri S. Chakravarti, Secretary,
Ministry of Community Development & Cooperation.
6. Shri D. P. Singh,
Joint Secretary (Agriculture),
Planning Commission.
7. Shri Ameer Raza,
Joint Secretary, Department of Agriculture,
Ministry of Food & Agriculture.

Member Secretary

Shri M. P. Bhargava,
Cooperation Commissioner,
Department of Cooperation,
Ministry of C.D. & Coop.

ORDER

ORDERED that copies of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

S. CHAKRAVARTI, Secy.

MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 25th February 1965

No. 24(3)-Tex(A)/64.—In the Government of India Ministry of Commerce, Resolution No. 24(3)-Tex(A)/64, dated the 4th January, 1965, published in the Gazette of India, Part I, Section 1 on the 16th January, 1965, the following amendment shall be made, namely :—

For the existing entry at Serial Number 22, the following shall be substituted, namely :—

"Agricultural Commissioner with the Government of India, Ministry of Food & Agriculture."

B. K. VARMA, Under Secy.

MINISTRY OF INDUSTRY AND SUPPLY

(Department of Industry)

AMENDMENT

New Delhi, the 2nd March 1965

No. 3-102/64-MEI.—Reference the Ministry of Industry & Supply, Resolution No. 3-102/64-MEI, dated the 9th February, 1965 constituting a Technical Committee to examine some of the problems of the Cement Machinery Industry.

2. In para 2 of the Resolution the following may be added at Serial No. 4.

"4. Shri S. K. Sinha,
Industrial Adviser,
Directorate General of Technical Development."

The existing S. Nos. 4 and 5 may be re-numbered as S. Nos. 5 and 6.

3. The following may be added to the re-numbered Serial No. 5.

"(viii) Messrs Associated Cement Companies Ltd.,
121, Queen's Road,
Bombay-1".

RESOLUTION

New Delhi, the 6th March 1965

No. 1-2/63-*MEI*.—Reference the Ministry of Steel, Mines and Heavy Engineering Resolution No. 1-2/63-MEI, dated the 25th March, 1964 constituting a Panel for the Ball Bearing Industry.

It has been decided that Major M. C. Patni, EME Directorate of Standardisation, HQ Research and Development Organisation, Ministry of Defence, will also be a Member of the Panel on the Ball Bearing Industry.

ORDER

ORDERED that a copy of the above Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India.

HARBANS SINGH, Dy. Secy.

New Delhi, the 5th March 1965

No. 18(3)*Prod./64*.—By virtue of the powers vested in the Government of India under Rule 3 of the Rules of the National Productivity Council which has been registered as a Society under the Societies Registration Act, 1860 (Act XXI of 1860) and in supersession of the Ministry of Industry & Supply Notification No. 18(3)Prod./64, dated the 18th August, 1964, the Government of India hereby nominate under clause (a) of the said Rule, Shri T. N. Singh, Minister of Industry, as President of the National Productivity Council with immediate effect.

P. M. NAYAK, Jt. Secy.

MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE
(Department of Agriculture)

CORRIGENDUM

New Delhi, the 4th March 1965

No. 10-2/65-*FAIT*.—In the Government of India Ministry of Food and Agriculture (Department of Agriculture) Resolution No. F. 16-72/47-Policy dated the 8th November, 1948 as amended from time to time, the following changes in the composition of the National Food and Agriculture Organization Liaison Committee, are hereby notified :—

Set up of the National Food and Agriculture Organization Liaison Committee

Under the heading "MEMBERS" after '1 the Vice-President, Indian Council of Agricultural Research' the following shall be added :—

1. Director, Central Food Technological Research Institute, Mysore or his nominee.

ORDER

ORDERED that a copy of this notification be communicated to all State Governments, Chief Commissioners, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Department of Parliament Affairs, the Private and Military Secretaries to the President, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Auditor General of India, the Planning Commission, All Ministries of the Government of India, FAO Headquarter, Rome and FAO Regional Office, 1, Ring Road, Kilokri, New Delhi.

ORDERED also that the notification be published in the Gazette of India for general information.

K. CHATTERJEE, Under Secy.

(I.C.A.R.)

New Delhi, the 24th February 1965

No. 4-95/63-*Com. IV*.—In pursuance of Bye-Law XII (4) of the Bye-Laws of the Indian Central Tobacco Committee, the Audit Report, together with the audited statement of receipts and payments of the Committee for the year 1962-63, is published for general information.

Audit Report on the Accounts of the Indian Central Tobacco Committee, Madras for the year 1962-63.

An analysis under main headings of the Receipts and Payments of the Committee during the year 1962-63 is given below:

Receipts	(in lakhs of rupees)	Payments	(in lakhs of rupees)	
Opening Balance	26·24	*Administration of Committee :*		
		Pay and Allowances	1·91	
Grant from Govt. of India	13·00	Contingencies	1·71	
Special Grant from Govt. of India for 3rd Five Year Plan Schemes	2·94			3·62
Interest on Investments	0·23	*Improvement of Agriculture of Tobacco :*		
		Expenditure on Research Stations	9·89	
		Grants-in-aid	2·09	
				11·98
Receipt from Committed Expenditure Schemes	0·85	Development & Improvement of Tobacco and its products		0·83
Receipts from Third Five Year Plan Schemes	0·16	Committed Expenditure Schemes		0·87
		Third Five Year Plan Schemes		4·51
Indian Central Tobacco Committee Provident Fund	2·47	Miscellaneous		0·76
Receipts from Committee's Publications	0·19	*Closing Balance:*		
		Investments	22·06	
Other Receipts	1·47	Advances	2·84	
		Imprests	0·08	24·98
	47·55			47·55

The Committee paid grants-in-aid of Rs. 4·93 lakhs to State Governments and other Institutions in 1962-63.

The Committee deposited a sum of Rs. 38·01 lakhs with the Central Public Works Department and Electrical Divisions over a period of eleven years from 1951-52 to 1962-63 for executing works in the different Research Stations. Only a sum of Rs. 21·39 lakhs has been adjusted on a lump sum basis so far towards the cost of works executed by the Central Public Works Department. Details of the cost of each work are awaited from the Central Public works Department. For the balance of Rs. 16·62 lakhs, no adjustment has been made.

For the construction of a hostel and a lecture hall (estimated cost Rs. 2·80 lakhs) at Rajahmundry under the Schemes for Training in the Improved Methods of Tobacco Cultivation, Handling, Curing etc., a plot of land (1·99 acres) was purchased at a cost of Rs. 11,077 in October, 1958, but the work has not started so far.

It has been stated by the Committee in December 1963 that the preliminary drawing and estimates were received from the Central Public Works Department only in March 1961 and therefore the work could not be included in the Third Plan. It was re-opened by the Policy and Extension Sub-Committee in 1962-63 and sanction has been accorded in September 1963 to construct only a hostel. The estimated increase in cost on account of delay in starting the construction is Rs. 56,306.

It has been stated by the Committee (January, 1964) that even the construction of the hostel has been deferred on account of paucity of funds, as a result of cuts imposed by the Government in the Committee's budget.

HUSSAIN AGA, Accountant General

INDIAN CENTRAL TOBACCO COMMITTEE

RECEIPTS & PAYMENTS ACCOUNTS FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 1963

Receipts	Rs. P.	Rs. P.	Payments	Rs. P.	Rs. P.
I. Opening balance as on 1-4-1962		26,23,555·78	I. Administration of the Committee		3,62,496·94
II (*a*) Government of India Grant-in-aid for 1962-63		13,00,000·00	II Improvement of Agriculture of tobacco		
(*b*) Special Grant from the Govt. of India for financing the scheme included in the Third Five Year Plan		2,93,510·00	(*a*) Expenditure on the Research Stations :		
			(*i*) Central Tobacco Research Instt., Rajahmundry	6,04,762·72	
III. Other Receipts:			(*ii*) Cigarette Tobacco Research Sub-Station, Guntur	80,452·51	
(*a*) Interest on investments ..		22,566·00	(*iii*) Hookah and Chewing Tobacco Research Station, Pusa ..	93,534·83	
(*b*) Receipts from Research Stations:			(*iv*) Wrapper and Hookah Tobacco Research Station, Dinhata ..	1,11,647·99	
(*i*) Central Tobacco Research Instt., Rajahmundry	34,117·04		(*v*) Cigar & Cheroot Tobacco Research Station, Vedasandur	98,647·42	9,89,045·37
(*ii*) Cigarette Tobacco Research Sub-Station, Guntur	26,995·21		(*b*) *Grants-in-aid :*		
(*iii*) Cigar and Cheroot Tobacco Research Station, Vedasandur	21,918·88		(*i*) Bidi Tobacco Research Station, Anand ..	1,51,307·36	
(*iv*) Hookah & Chewing Tobacco Research Station, Pusa	13,832·29		(*ii*) Bidi Tobacco Research Sub-Station, Nipani	16,295·00	
(*v*) Wrapper and Hookah Tobacco Research Station, Dinhata ..	26,627·09	1,23,490·51	(*iii*) Scheme for the control of 'leaf blight' disease of tobacco in Kaira Distt.	5,366·70	
(*c*) Receipts from the Schemes financed by the Committee			(*iv*) Scheme for the improvement of indigenous tobacco in Uttar Pradesh	12,899·00	
(*i*) Bidi Tobacco Research Scheme, Anand ..	11,219.04		(*v*) Scheme for research work in Tobacco in Vidarbha Region of the Maharashtra State.	6,580·00	
(*ii*) Seed Multiplication Farm Scheme, Anand	8,195·93	19,414·97	(*vi*) Scheme for exploratory station for cigarette tobacco in Uttar Pradesh ..	730·38	
(*d*) Sundry Receipts	2,533·90		(*vii*) Scheme for exploratory station for cigarette tobacco in Rajendernagar, Hyderabad	7,700·00	
(*e*) Receipts from the Committed Expenditure Schemes :			(*viii*) Schemes for the introduction & cultivation of Natu tobacco (N. tabacum) in U.P.	8,320·00	2,09,198·44
(*i*) Scheme for strengthening the Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry ..	17,077·18		III. Development & Improvement of Tobacco and its products:		
(*ii*) Production and distribution of pure seeds and seedlings:			(*i*) Scheme for Seed Multiplication and Growing General Crops of Tobacco, Anand	66,260·39	
(*a*) Rajahmundry .	46,957·80		(*ii*) Scheme for the organisation of tobacco extension service in Guntur Distt. .. .	9,597·00	
(*b*) Vedasandur . .	3,772·33		(*iii*) Scheme for conducting comparative trials of Farm *vs.* Farmers Methods of cultivation in the fields of tobacco growers in Bihar ..	6,354·75	
(*c*) Pusa	1,172·89		(*iv*) Scheme for the development of tobacco in the new areas of Madras State	750·00	82,962·14
(*d*) Dinhata	649·86		IV. Improvement of Marketing of tobacco.		
(*e*) Anand	10,010·00		Scheme for the establishment of an exploratory marketing centre at Bhagwanpur (Bihar State) . ..		501·00
(*f*) Ferozepore . ..	5,859·30	85,499·36	V. Miscellaneous :		
(*f*) Receipts from the Committee's Publications. Receipts from the Sale of 'Indian Tobacco', 'Tobacco Bulletin' etc. and advertisements in the same ..	18,703·41		(*i*) Imperial Tobacco Company Studentship ..	4,355·31	
(*g*) Refund of Unspent balance (Normal):			(*ii*) Deposits refunded ..	450·00	
(*i*) Bidi Tobacco Research Station, Nipani ..	2,374·33		(*iii*) Provident Fund Deposits refunded	70,341·00	75,146·31
(*ii*) Scheme for the revision of marketing report ..	7·04	2,381·37			
(*h*) Deposits received ..		212·50			
(*i*) Indian Central Tobacco Committee Provident Fund		2,47,145·00			
(*j*) Receipts from the Third Five Year Plan Schemes:					
(*i*) Tobacco Research Station, Hunsur	13,697·65				
(*ii*) Scheme for storage experiments at the Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry ..	1,721·05				
(*iii*) Refund of Unspent balance in respect of the Scheme for strengthening the Bidi Tobacco Research Station, Anand	452·68	15,871·38			
	C/o	47,54,884·18			

Receipts	Rs. P.	Rs. P.	Payments	Rs. P.	Rs. P.
Brought forward		47,54,884·18	VI. Committed Expenditure Schemes :		
			(*a*) Scheme for strengthening the Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry	36,412·59	
			(*b*) Scheme for the production and distribution of pure seeds and seedlings :		
			(*i*) Rajahmundry ..	19,834·86	
			(*ii*) Vedasandur	5,173·13	
			(*iii*) Pusa	6,409·21	
			(*iv*) Dinhata	4,908·35	
			(*v*) Anand	9,290·95	
			(*vi*) Ferozepore	5,072·67	87,101·76
			VII. Third Five Year Plan Schemes :		
			(*a*) Scheme for technological research on various tobaccos at Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry ..	5,242·24	
			(*b*) Scheme for technological research on bidi tobacco at Anand	44,994·97	
			(*c*) Scheme for catalogueing of genetic stocks on various types of tobacco at Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry	7,664·53	
			(*d*) Scheme for strengthening the Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry ..	22,506·96	
			(*e*) Tobacco Research Station Hunsur	61,910·71	
			(*f*) Scheme for strengthening the Tobacco Research Station, Hunsur ..	4,897·25	
			(*g*) Scheme for training in the improved methods of tobacco cultivation, handling, curing etc.		
			(*i*) Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry ..	18,790·05	
			(*ii*) Anand	12,625·93	
			(*h*) Scheme for conducting storage experiments :		
			(*i*) Central Tobacco Institute, Rajahmundry	5,590·05	
			(*ii*) Anand	3,478·64	
			(*i*) Scheme for Strengthening the storage experiments:		
			(*i*) Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry	613·64	
			(*ii*) Anand	6,523·94	
			(*j*) Scheme for strengthening the seeds and seedlings scheme :		
			(*i*) Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry ..	917·81	
			(*ii*) Vedasandur	967·98	
			(*iii*) Ferozepore	2,000·00	
			(*iv*) Anand	36,000·00	
			(*k*) Scheme for the construction of quarters :		
			(*i*) Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry	67,829·87	
			(*ii*) Tobacco Research Station, Hunsur ..	50,360·00	
			(*l*) Scheme for the construction of Non-residential buildings at Anand	22,000·00	
			(*m*) Scheme for the extension of wrapper tobacco cultivation to the cultivator's fields in Dinhata	8,710·06	

Receipts	Rs. P.	Rs. P.	Payments	Rs. P.	Rs. P.
Brought forward		47,54,884·18	(*n*) Scheme for the production of tobacco suitable for manufacturing trials in West Germany (Guntur)	32,087·48	
			(*o*) Scheme for reconciliation of difference in Acreage figures in Kaira Dist. of Gujarat State	13,210·00	
			(*p*) Scheme for Hookah Tobacco Research Sub-Station, Ferozepore ..	14,468·00	
			(*q*) Scheme for the control of powdery mildew of cigarette tobacco in Mysore	7,350·00	4,50,740·11
			VIII. Cash and other Balances :		
			A.(*a*) Investments: 3% Government of India loan of 1970-75 of the Face value of..	7,54,100·00	
			(*b*) National Savings Certificates and National Defence Certificates (Provident Fund) including National Defence Certificate for Rs. 2,25,000 purchased during the year and Rs. 26,100 being the interest accrued on the certificates in 1962-63 (Total interest accrued Rs. 99,100)	9,57,100·00	
			(*c*) Personal Deposit Account with the Reserve Bank of India, Madras, and Post Office Savings Bank Account, Mylapore	4,95,123·00	
				22,06,323·91	
			B. Advance to be adjusted:		
			(*a*) Research Stations:		
			(*i*) Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry ..	35,013·20	
			(*ii*) Cigarette Tobacco Research Sub-Station, Guntur	64,555·35	
			(*iii*) Cigar and Cheroot Tobacco Research Station, Vedasandur	5,071·57	
			(*iv*) Hookah & Chewing Tobacco Research Station, Pusa ..	11,720·47	
			(*v*) Wrapper & Hookah Tobacco Research Station, Dinhata ..	33,445·74	
			(*vi*) Tobacco Research Station, Hunsur ..	45,474·43	
			(*b*) Other Advances ..	88,717·44	
				2,83,998·20	
			C. Imprests:		
			(*i*) Secretary, Indian Central Tobacco Committee	500·00	
			(*ii*) Director, Tobacco Research, Central Tobacco Research Institute, Rajahmundry	1,750·00	
			(*iii*) Plant Breeder, Cigarette Tobacco Research Sub-Station, Guntur	1,100·00	
			(*iv*) Officer-in-Charge, Cigar & Cheroot Tobacco Research Station, Vedasandur	1,000·00	
			(*v*) Officer-in-Charge, Hookah and Chewing Tobacco Research Station, Pusa ..	1,000·00	

Receipts	Rs. P.	Rs. P.	Payments	Rs. P.	Rs. P.
Brought forward ..		47,54,884·18	(vi) Officer-in-Charge, Wrapper and Hookah Tobacco Research Station, Dinhata ..	1,000·00	
			(vii) Officer-in-Charge, Tobacco Research Station, Hunsur ..	1,000·00	
			(viii) Agronomist (Tobacco) Ferozepore	20·00	
				7,370·00	
			Total closing balance as on 31-3-1963		24,97,692·11
TOTAL .		47,54,884·18	TOTAL ..		47,54,884·18

K. C. CHETTY, *Secretary*

I have examined the foregoing accounts of the Indian Central Tobacco Committee. I have obtained all the information and explanations that I have required and subject to the observations in the Audit Report appended, I certify, as a result of my audit, that in my opinion these Accounts are properly drawn up so as to exhibit a true and fair view of the state of affairs of the concern according to the best of my information and explanations given to me and as shown by the books of the concern.

HUSSAIN AGA *Accountant General*

J. S. UPPAL, Under Secy.

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi, the 6th March 1965

No. 22(27)/63-*SR.II.*—On the recommendation of the Scientific Advisory Committee to the Cabinet, the Government of India have decided to set up a National Committee for the International Council of Scientific Unions consisting of the following :

Chairman

1. Dr. H. J. Bhabha,
Chairman, Atomic Energy Commission and Secretary,
Department of Atomic Energy,
Bombay.

Members

2. Shri Dharma Vira
Cabinet Secretary.
3. Shri S. S. Khera,
Chairman,
Hindustan Aeronautics Ltd.,
New Delhi.
4. Dr. V. R. Khanolkar,
National Research Professor in Medicine,
C/o Indian Cancer Research Centre,
Parel, Bombay.
5. Dr. D. S. Kothari,
Chairman,
University Grants Commission,
New Delhi.
6. Prof. P. C. Mahalanobis,
Director,
Indian Statistical Institute,
Calcutta.
7. Dr. B. P. Pal,
Director,
Indian Agricultural Research Institute,
Pusa, New Delhi.
8. Dr. C. G. Pandit,
Emeritus Scientist,
National Institute of Communicable Diseases,
22, Rajpur Road,
Delhi.
9. Prof. M. S. Thacker,
Member, Planning Commission,
New Delhi.
10. Shri H. N. Sethna,
Director, Chemical Group,
Atomic Energy Establishment,
Bombay.
11. Dr. K. R. Ramanathan,
Director,
Physical Research Laboratory,
Ahmedabad.
12. Prof. K. Chandrasekharan,
Deputy Director (Mathematics),
Tata Institute of Fundamental Research,
Colaba, Bombay.
13. Dr. S. Husain Zaheer,
Director General,
Council of Scientific & Industrial Research,
and *Ex-Officio* Secretary to the Government of India,
Ministry of Education.
14. Dr. S. Bhagavantam,
Scientific Adviser to the Minister of Defence,
New Delhi.

2. The objects of the Indian National Committee for International Council of Scientific Unions will be to realise the objects of the Council which are as follows :—

(a) to facilitate and co-ordinate the activities of the International Scientific Unions in the field of the exact and the natural sciences;

(b) to act as the co-ordinating centre for the national organizations adhering to the Council;

(c) to encourage international scientific activity;

(d) to enter, through the intermediary of the national adhering organizations, into relations with the Governments of their respective countries in order to promote scientific research in these countries;

(e) to maintain relations with the specialized and related agencies of the United Nations; and

(f) to make such contacts and mutual arrangements as are deemed necessary with other International Councils, Unions or organizations, where common interests exist.

M. G. RAJA RAM, Jt. Secy.

MINISTRY OF TRANSPORT

(Transport Wing)

RESOLUTION

New Delhi, the 26th February 1965

No. 30-*T*(4)/63.—Shri R. N. Roy, Transport Commissioner, Bihar, has been appointed a member of the Study Group on Motor Vehicles Taxation reconstituted, *vide* this Ministry's Resolution No. 30-T(4)/63, dated the 8th July, 1964, *vice* Shri S. Q. Rizvi, with effect from 11th September 1964.

ORDER

ORDERED that a copy of the resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India for general information.

A. S. BHATNAGAR, Dy. Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

RESOLUTIONS

New Delhi, the 2nd March 1965

No. EL-II-3(1)/65.—The question of effecting improvements in the transmission and distribution system of Delhi so as to reduce breakdowns in the supply of electricity has received considerable attention during the recent years. While there has been considerable improvement in the matter, it has been felt that there is still a need for more detailed study in order to suggest measures for further improvement. It has, therefore, been decided to set up a Committee to examine the whole question consisting of :—

Chairman

(i) Shri K. L. Vij, Member, Central Water & Power Commission.

Members

(ii) Shri J. R. Handa, Chief Engineer, Delhi Electric Supply Undertaking.

(iii) Shri H. R. Bhatia, Principal, Thapar Institute of Engineering, Patiala.

(iv) Shri K. Matthan, Killick Industries, Bombay.

Secretary

(v) Shri N. S. Vasant, Secretary, Delhi Thermal Project Control Board.

2. The terms of reference of the Committee will be as follows :—

(i) to review the breakdowns in the supply of electricity in Delhi in 1964;

(ii) to suggest measures to avoid such breakdowns in future; and

(iii) to examine the adequacy of staff at present engaged in the maintenance and suggest improvements, if any.

The Committee will examine the distribution systems of both the Delhi Electric Supply Undertaking and the New Delhi Municipal Committee.

3. The report of the Committee will be submitted to the Government of India in the Ministry of Irrigation and Power not later then three months from the date of issue of this Resolution.

ORDER

ORDERED that the above Resolution be communicated to the Delhi Municipal Corporation, Delhi Electric Supply Undertaking, the New Delhi Municipal Committee, the Ministries of the Government of India, the Prime Minister's Secretariat, Cabinet Secretariat, Secretary to the President, the Planning Commission, the Comptroller and Auditor General of India, and the Delhi Administration.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India.

The 3rd March 1965

No. EL-II-3(1)/64.—The Ministry of Irrigation and Power, *vide* Resolution No. EL-II-3(1)/64, dated 24th April 1964, set up a Committee with Shri R. Venkataraman, Minister for Industries, Madras, as convenor, with the following terms of reference :—

(a) To suggest ways and means of improving the revenues of various State Electricity Boards and also the income from electricity duty; and

(b) To suggest the pattern of relationship between tariff and electricity duty.

The Committee has submitted its report and *inter-alia* made the following recommendations :—

(i) The first phase of the objective for all the State Electricity Boards should be to aim at higher revenues sufficient to cover operation and maintenance charges, contributions to the general and depreciation reserves and interest charges on loan capital. Boards which have not already achieved this should aim at realising the objective within a period of three to five years.

(ii) (a) As a second phase objective, the Boards should aim at achieving a balance of revenue after meeting all the charges indicated in the first phase, working out a net return of 3% on the capital base. According to the Committee, this would amount to a return of 11%, taking into account the electricity tax/duty levied by the State Government after meeting operation and maintenance charges and depreciation *i.e.*, interest charges 6%, net profit 3% general reserve ¼% and electricity duty 1¼%.

(b) Boards which have already achieved the first phase should immediately proceed to realise the the second phase and the other Boards should aim at achieving the second phase within three to five years of their achieving the first phase.

2. The Government of India have carefully considered the above recommendations. In view of the large investments in the electricity supply industry and of the need to maximise the returns from such investments, the Government of India are of the view that the rate of return recommended by the Committee should be regarded as the minimum which should be achieved and that every effort should be made to obtain better returns. It is also necessary to accelerate the return on these investments in order to augment resources for new investments in the industry. The Government of India consider that it should be possible to attain this objective in a period shorter than that recommended by the Committee and that all efforts should be made to achieve this.

3. The other recommendations made by the Committee are under consideration.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India and a copy thereof communicated to all concerned.

V. NANJAPPA, Secy.

MINISTRY OF LABOUR AND EMPLOYMENT

RESOLUTION

New Delhi, the 22nd February 1965

No. WB-21(16)/64.—A Central Wage Board for the port and dock workers at major ports was constituted by the Government of India by their Resolution No. WB-21(4)/64, dated the 13th November, 1964. The Wage Board has made recommendations, as shown in the appendix, for grant of dearness allowance at enhanced rates.

2. Government have decided to accept the recommendations of the Wage Board and to request the concerned employers to implement the same as early as possible.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

P. M. MENON, Secy.

APPENDIX

Central Wage Board for Port and Dock Workers

Having considered the matter in all its aspects, the Board is of the view that without prejudice to the contention of either party (employers or employees), the Port and Dock Workers should get the enhanced D.A. as per recommendation of the Das Commission as per past practices.

In doing so, the Board is not expressing any opinion on the question of interim relief which will be decided by it after taking into consideration all relevant facts including the total emoluments of the workers as they stand at the time.

Sd/- L. P. Dave.
Sd/- D. T. Lakdawala.
Sd/- I. D. Das Gupta.
Sd/- S. C. Sheth.
Sd/- T. K. Nambiar.
Sd/- S. R. Kulkarni.
Sd/- Makhan Chatterjee.
Sd/- Maitreyee Bose.

Sd/- N. Ahmed.

Bombay, 10th February 1965.

RESOLUTION

New Delhi, the 3rd March 1965

No. WB-3(26)/64.—The Government of India, by their Resolution No. WB-3(26)/64, dated the 14th January, 1965, announced their acceptance of the recommendations made by the Central Wage Board for Coffee Plantation Industry, in regard to the wage structure of the field workers and the maistries in the Coffee Plantation Industry. The Wage Board considers that a clarification of the recommendations is called for and it has requested Government to add the following at the end of the recommendations published in the Appendix to the Government Resolution mentioned above :

"The Board's recommendations regarding the wages of field workers and maistries from 1-7-1965 would be included in the Board's final report".

2. In view of the position explained by the Wage Board, Government have decided to make the following amendments in their Resolution referred to above :—

(a) The last sentence in para 1 of the Resolution *viz.* "These recommendations are to take effect from 1st July 1964 and remain in force for a period of five years" will be modified to read as follows :—

"These recommendations are to take effect from 1st July, 1964."

(b) In the Appendix to Resolution, after sub-para (2), the following sub-para will be added, namely :

"(3) The Board's recommendations regarding the wages of field workers and maistries from 1-7-1965 would be included in the Board's final report."

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India, for general information.

R. L. MEHTA, Addl. Secy.

PRINTED IN INDIA BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1965